मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

एक कड़वी बात

"हम मुसलमानों से कड़वी बात कहते हैं.....तुमने ज़िन्दगी का जो नमूना पेश किया है, उसमें कौन सा आकर्षण है?पहले तुम जिस राह से गुज़र जाते थे छाप छोड़ जाते थे, देर तक तुम्हारी खुशबू महसूस होती रहती थी, जैसे ठण्डी हवा के झोंके महसूस होते रहते हैं। मुसलमान जिधर से गुज़र गए, गली–कूचे महका गए और जहां से चले आए वहां से सिफ़ारिशें भेजीं गईं कि हमारे देश में सबकुछ है, मुसलमान नहीं हैं, जिन्हें देखकर लोग अपनी ज़िन्दगियां बदलें और जो उनके मामलों व मुक़द्दमों में दो टूक फ़ैसला करें, उनकी इच्छा पर मुसलमान भेजे गए। अफ़सोस! अब तुम ऐसे बन गए कि तुम्हारे न होने से देश में कोई कमी महसूस नहीं होती।"

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली
JAN 19
₹10/-

बीमारियों और परेशानियों पर सवाब

"हज़रत अबूसईद (रज़ि०) सहाबी रसूलुल्लाह (स०अ०) से रिवायत करते हैं कि किसी मुसलमान का कोई मशक़्क़त व ताब, फ़िक्र और रंज, अज़ीयत और ग़म नहीं पहुंचता, यहां तक कि कांटा ही लग जाए जिसमें उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा न हो जाता हो।"

हर मुसलमान के लिये छोटी से छोटी तकलीफ़ जो उसे ग़ैब से पहुंच जाती है, उसके गुनाहों के कफ़्फ़ारे ही का बाइस बन जाती है। वह गोया मेहर बसूरत क़हर ही साबित होती है।

"हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०अ०) ने फ़रमाया कि जब मुसलमान किसी बलाए जिस्मानी (मर्ज़ वग़ैरह) में पड़ जाता है तो फ़रिश्ते को जो उसके नेक आमाल लिखा करता है, हुक्म हो जाता है कि वह जो नेक काम पहले से (हालते सेहत में) करता था, वह सब लिखते रहो, फिर अल्लाह अगर उसको शिफ़ा दे देता है तो उसको पाक—साफ़ कर देता है और अगर वफ़ात देता है तो उसके साथ मग़्फ़िरत व रहमत का मामला करता है।"

यह इन्तिहाई करम व रहमत हर मुसलमान के लिये है कि अगर वह किसी जिस्मानी माज़ूरी से किसी इबादत या नेक काम से रुक जाता है तो उसका अज्र ज़रा भी नहीं कटता बल्कि बराबर जारी रहता है। अगर सेहत होगी तो वह पाक—साफ़ होकर निखर आता है और अगर मौत का वक़्त आ गया तो इस आलम से मग़फ़ूर और मरहूम होकर जा पहुंचता है। ग़रज़ हिज़्न व मलाल व्यास की कोई सूरत नहीं।

"मुहम्मद बिन ख़ालिद अपने बाप और अपने दादा के वास्ते से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (स०अ०) ने फ़रमाया कि जब बन्दे के लिये कोई मर्तबा अल्लाह की तरफ़ से तजवीज़ होता है जिसको वह अपने अमल के ज़रिये नहीं पहुंच सकता तो अल्लाह तआला उस पर, उसके जिस्म या उसके माल या उसकी औलाद पर कोई बला मुसल्लत करके उसको सब्र देता है, हत्ता कि वह रुत्बे पर पहुंच जाता है।"

लीजिए! लड़के के वफ़ात पाने की, बीवी के मफ़लूज व माज़ूर हो जाने की, ख़ुद अपने शदीद बीमार होने की, तिजारत में लगे हुए सरमाये के डूब जाने की, माक़ूल मुलाज़मत एकदम से छूट जाने की, ग़रज़ कि हर क़िस्म के माली व जानी सदमा पहुंच जाने की, कैसी दिल को सुकून देने वाली तौजीद हासिल हो गयी। हर हालत में यह मेहर व करम ही की है, मोमिन की मर्तबा अफ़ज़ाई ही की है। गो बज़ाहिर क़हर व ग़ज़ब की मालूम हो रही है। इसके यक़ीन आ जाने के बाद कोई बड़े से बड़ा सदमा भी सदमा रह सकता है?

"हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०अ०) ने फ़रमाया है कि क़यामत के रोज़ जिस वक़्त अहले मुसीबत को सवाब अता होगा, तो उस वक़्त अहले आफ़ियत तमन्ना करेंगे कि काश दुनिया में हमारी खाल क़ैंचियों से काटी जाती (ताकि) हमको भी ऐसा ही सवाब मिलता।"

कितना सरमाया—ए—तस्कीन इस हदीस में हर मोमिन के लिये है! आज के मसाकीन भी सलातीन के दर्जे पर होंगे। आज का हर मज़लूम व मुब्तिला उस वक़्त अमीरों, वज़ीरों, ताजदारों के लिये बाइसे रश्क होगा।

मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी (रह०)

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:१ | जनवरी २०१९ ई० | वर्ष:११

संरक्षक

हज़रत मौलाना
सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
(अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

निरीक्षक

मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्ररी- दारे अरफ़ात

सम्पादक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाख़ुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

अनुवादक

मोहम्मद सैफ़

मुद्रक

मो० हसन नदवी

इस अंक में:

इख़्लास और अख़्लाक़.....२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

ख़राबी की जड़—बुराई तथा पाप की इच्छा.....३
हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०

इस्लाम का पारलौकिक विचार.....५
हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

जीवन का केन्द्र.....७
मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

राम मंदिर के लिए बेताबी का ढोंग.....९
मौलाना असरारुल हक़ क़ासमी रह०

त्याग व समानता क्या है?.....११
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

ज़कात के कुछ मसले.....१३
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

रिज़्क—ए—इलाही की बरकत व अहमियत.....१५
अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

इस्लाम का तसव्वुर—ए—तिजारत.....१७
मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

इस्लामी सभ्यता की विशेषताएं.....१९
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

E-Mail: markazulimam@gmail.com | www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल—नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

प्रति अंक १०रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल—नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक १००रू०

Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi Samiti (Punjab National Bank) A/c No. 6127002100000339 (IFSC: PUNB0612700)

सम्पादकीय

इख़्लास या अख़लाक़

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

ज़माना–ए–क़रीब के मशहूर आरिफ़ व बुज़ुर्ग हज़रत मौलाना अब्दुलक़ादिर साहब रायपूरी रह0 से किसी ने सवाल किया कि इस वक़्त मुसलमानों में इन्तिशार और बिगाड़ की वजह क्या है?हज़रत ने दो जुम्लों में इसका जवाब दिया, सच्ची बात यह है कि इस दौरे इन्तिशार में इससे ज़्यादा तीर बहदफ़ नुस्ख़ा नज़र नहीं आता, हज़रत ने फ़रमायाः ''इस वक़्त मुसलमानों में इन्तिशार व बिगाड़ की सबसे बड़ी वजह यह है कि इख़्लास नहीं है और अख़लाक़ नहीं है।''

इस दौर–ए–तरक़्क़ी में जबकि वसाएल की भरमार है। मदरसों व मकतबों का भी अल्हम्दुलिल्लाह कुछ न कुछ सिलसिला जारी है। तहरीकात अपना काम कर रही हैं। बड़े–बड़े इस्लामिक सेन्टर्स क़ायम किए जा रहे हैं। यहां तक कि मस्जिदों की तामीर में एक मुक़ाबला है। यह सबकुछ है, लेकिन अक्सर रूह से ख़ाली। न काम करने वालों के अन्दर इख़्लास नज़र आता है और न कराने वालों के अन्दर और ज़ाहिर है कि जब इख़्लास नहीं होता तो मफ़ादात टकराते हैं और उसका नतीजा इन्तिशार की शक्ल में ज़ाहिर होता है।

यह तन्हा इख़्लास है कि इसमें मफ़ादात कभी नहीं टकराते। काम करने वालों का बराहरास्त ताल्लकु आसमान से होता है। इसमें हर तरह की ग़रज़ व मनफ़अत से बालातर होकर काम किया जाता है। हज़रात–ए–सहाबा की ज़िन्दगी में इसकी खुली मिसालें हैं। अल्लाह तआला ने उनके कामों को क़यामत तक के लिए क़ुबूल फ़रमाया और आज जो कुछ भी दीन व ईमान, किताब व सुन्नत की तालीमात हैं, शरीअत की रोशनी है, वह सब उन्हीं सहाबा की क़ुर्बानियों और इख़्लास का समरा है। ।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 का वाक़्या आज के दौरे ज़वाल में एक अफ़साना मालूम होता है। मगर वह हक़ीक़त में दीन के दीवाने थे। जब अमीरुलमोमिनीन हज़रत उमर रज़ि0 ऐन मारके के दौरान उनको इसलिए माज़ूल कर दिया कि उनको फ़तेह का निशान समझा जाने लगा था। हज़तर ख़ालिद जिस लश्कर में अमीर होंगे वहां शिकस्त नहीं हो सकती। हज़रत उमर रज़ि0 ने महसूस किया कि यह तसव्वुर ग़ैर इस्लामी है। फ़तेह व नुसरत अल्लाह के हाथों में है। वह किसी से वाबस्ता नहीं। यरमूक की जंग में उनको अमीरुलमोमिनीन का रुक़्क़ा पहुंचा कि तुम इमारत से माज़ूल किए जाते हो, और अमीनुल उम्मत हज़रत अबूउबैदा रज़ि0 को अमीर मुक़र्रर किया जाता है। यह कोई मामूली वाक़्या नहीं था, लेकिन हज़रत ख़ालिद रज़ि0 के माथे पर शिकन नहीं आयी। उसी वक़्त उन्होंने हज़रत अबूउबैदा रज़ि0 को इमारत सुपुर्द कर दी। लोगों ने हज़रत ख़ालिद रज़ि0 से कहा कि आप क्या करेंगे?उनका जवाब रहती दुनिया तक के लिए दस्तावेज़ है, इस्लामी फ़िक्र का एक दरख़्शां बाब है। फ़रमायाः उमर के लिए लड़ता तो नहीं लडूंगा, मैं तो अल्लाह के लिए लड़ता था, आज भी अल्लाह के लिए यह जान हाज़िर है। उसी इख़्लास और अख़लाक़ की कारफ़रमाई थी कि सौ साल गुज़रे और इस्लाम का परचम लहराने लगा।

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 बड़ी हक़ीक़त पसंदाना बात कहते थे कि मुख़्लिस का सफ़ीना डूबते–डूबते पार लग जाता है और ग़ैर मुख़्लिस का सफ़ीना पार लगते–लगते डूब जाता है।

आज उम्मत की नांव भंवर में है। नांव हिचकोले खा रही है। इस बारे में हम सबको ग़ौर करने की ज़रूरत है कि पानी कहां मर रहा है। एक आरिफ़ की ज़बान से यह निकली हुई बात आज हर्फ़ ब हर्फ़ सादिक़ आ रही है। उम्मत का इन्तिशार दूर करना है। अलग–अलग सफ़ों में इत्तिहाद पैदा करना है, तो इसका नुस्ख़ा–ए–कीमिया यह है कि इख़्लास पैदा किया जाए और अख़लाक़ की सतह बुलन्द की जाए। जिस दिन उम्मत इस सिफ़त को समझ लेगी, इंशा अल्लाह यह कश्ती जो आज डांवाडोल नज़र आती है, क्या बईद कि यह जल्द ही साहिले मुराद को पहुंचकर इन्सानियत को अद्ल व इन्साफ़ और मुहब्बत व ईमान का वह पैग़ाम दे सके जिसकी हमेशा से ज़रूरत रही, लेकिन आज शायद सबसे ज़्यादा इसकी ज़रूरत है।

ख़राबी की जड़—बुराई तथा पाप की इच्छा

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

इतिहास का अध्ययन

दोस्तों और भाइयो! आप में से अधिकतर लोगों ने इतिहास का अध्ययन किया होगा। इन्सान आज नए नहीं हैं। वह हज़ारों साल से आबाद हैं। उनके सैंकड़ों बरस का इतिहास सुरक्षित है। उस इतिहास की सतह पानी की सतह की तरह बराबर नहीं है। इसमें ज़बरदस्त उतार—चढ़ाव है। इसमें आदमी कहीं ऊंचा नज़र आता है कहीं नीचा। कभी ऐसा लगता है कि यह इन्सानों का इतिहास नहीं, ख़ूंख़ारों तथा दरिन्दों का इतिहास है। यह सबका इतिहास हो सकता है किन्तु मनुष्य का नहीं। इसके अध्ययन से मनुष्य का सर झुक जाता है कि हममें ऐसे लोग भी गुज़रे हैं। यह निर्णय तो आने वाली नस्लें लेंगी कि हम और आप कैसे आदमी थे, लेकिन यह अनुमान हम लगा सकते हैं कि इन्सानों का पिछला रिकार्ड कैसा है?इसमें बहुत से ऐसे दौर नज़र आते हैं कि अगर बस चले तो हम इतिहास से उन पन्नों को निकाल दें। ऐसा रिकार्ड कि हम बच्चों के हाथों में देने को तैयार नहीं। मुझे उसकी कहानी नहीं सुनानी, लेकिन मुझे एक हक़ीक़त की ओर ध्यान आकर्षित कराना है कि इतिहास में जो ऐसे नागवार दौर गुज़रे हैं, उसमें ख़राबी की जड़ क्या है?

जब तक समाज में बुराई का रुझान तथा बिगाड़ की योग्यता न हो कोई उसको बिगाड़ नहीं सकता

लोगों! साधारणतयः लोग किसी ख़ास वर्ग या कुछ लोगों और कभी—कभी तन्हा किसी एक को पूरे समाज की ख़राबी का ज़िम्मेदार बता देते हैं और समझते हैं कि उन ख़राब तत्वों ने या उस बिगड़े हुए व्यक्ति ने पूरे जीवन को ग़लत रास्ते पर डाल दिया था। लेकिन मैं इस बात से सहमत नहीं। मैं इतिहास के अध्ययन के आधार पर कहता हूं कि एक मछली तालाब को गन्दा कर सकती है, लेकिन एक व्यक्ति सोसाइटी को बिगाड़ नहीं सकता। अर्थात अच्छे समाज में बुरे आदमी का गुज़र नहीं हो सकता, वह घुट—घुट कर मर जाएगा। जिस तरह मछली को पानी से निकाल दिया जाता है तो वह घुट कर मर जाती है, उसी प्रकार जो समाज बुराई को प्रोत्साहित नहीं करता, वह उसका स्वागत करने के लिये तैयार नहीं, उस समाज में बुराई तड़पने लगेगी, उसका दम घुटने लगेगा और वह दम तोड़ देगी।

हर ज़माने में अच्छे—बुरे इन्सान हुए हैं। लेकिन सब बुराइयों का उनको ज़िम्मेदार ठहराना और तमाम बुराइयों को उनके सर थोप देना ठीक नहीं। अगर कुछ बुरे लोग हावी हो गये थे तो उसका यह मतलब नहीं कि पूरी ज़िन्दगी का हैंडल उनके हाथ में था। वह जिस तरफ़ चाहते थे ज़िन्दगी को मोड़ देते थे, बल्कि बात यह है कि उस ज़माने में समाज में ख़ुद ख़राबी आ गयी थी। उस ज़माने का ज़मीर (अन्तरात्मा) गन्दा हो गया था। उसमें बुराइयों का रुझान पैदा हो गया था। उसके अन्दर अंधेर, अत्याचार तथा इच्छापूर्ति करने की ज़बरदस्त इच्छा पैदा हो गयी थी। वह स्वार्थी तथा नफ़्सपरस्त बन गया था। जिस दिल को घुन लग जाए, जो मन पापी हो जाए, आप उसे जरासीम से किसी तरह रोक नहीं सकते, आप उसको बेड़ियों में जकड़ करके भी रखेंगे तब भी उन चीज़ों से सुरक्षित नहीं रख सकते।

स्वार्थी मनुष्य

हर ज़माने में कुछ ऐसे व्यक्ति रहे हैं, जिनका विश्वास था कि बस हम और हमारे परिवार वाले ही इन्सान हैं तथा बाक़ी सभी हमारे सेवक हैं। कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं करोड़ो इन्सानों को बसता देखते हैं, लेकिन वह स्वयं अपने ही सीमित वर्ग को मनुष्य समझते हैं। ऐसे लोग बस यह समझते हैं कि दुनिया में बस उन्हीं के परिवार के दस—ग्यारह या बीस—पच्चीस इन्सान बसते हैं। ऐसे मनुष्य हमेशा रहे हैं जो अपनी—अपनी समस्याओं तथा संबंधियों को देखने के लिए सूक्ष्मदर्शी रखते हैं तथा दूसरों को देखने के लिए उनकी आंखें भी बन्द होती हैं। बहुत से दो चश्में रखते हैं, एक से अपने को देखते हैं, दूसरे से बाक़ी दुनिया को देखते हैं। उन्हें नज़र भी नहीं आ रहा है कि इन्सान कहां हैं। मेरा मानना है कि उनके पास वह

चश्मा है कि उसके द्वारा उन्हें अपने बच्चे आसमान से बातें करते नज़र आते हैं। उनको अपनी राई पर्वत तथा दूसरों का पहाड़ ज़र्रा नज़र आता है।

सुधार के विभिन्न उपाय तथा अनुभव

दुनिया के विभिन्न मनुष्यों ने अपनी–अपनी समझ के अनुसार जीवन के सुधार की पद्धति सोची तथा उन पर अमल करना शुरू कर दिया।

किसी ने कहा कि सारी ख़राबी की जड़ यह है कि इन्सानों को पेट भर खाने को नहीं मिलता। यही ज़िन्दगी को सबसे बड़ा रोग है। उन्होंने इसी मसले को अपना मिशन बना लिया। इसके नतीजे में पाप और बढ़ा। पहले लोग कमज़ोर थे, पाप भी उसी आधार पर कमज़ोर था, उन्होंने जब ख़ून के इंजेक्शन दिये जो क़ूव्वत–ए–हयात बढ़ाई तो उनके पाप भी ताक़तवर हो गये। दिल बदला नहीं, ज़मीर बदला नहीं, विचार बदले नहीं, ताक़त बढ़ गई, चिन्ता दूर हो गई, अन्तर यह आया कि पहले फटे कपड़े में पाप होते थे, अब क़ीमती लिबास में पाप होने लगे। पहले बेज़ोर और बेहुनर हाथों से पाप होते थे, अब ताक़तवर और हुनरमन्द हाथों से वही सब गुनाह होने लगे।

किसी ने कहा: शिक्षा की व्यवस्था की जाए। अज्ञानता, नाख़्वान्दगी ही फ़साद की जड़ है और सभी ख़राबियों की अस्ल वजह है। ज्ञान बढ़ा, लोगों ने जानकारियां प्राप्त कीं और नई–नई भाषाएं सीखीं, लेकिन जिनका ज़मीर फ़ासिद और ज़हन टेढ़ा था और दिल के अन्दर पाप बसा हुआ था उन्होंने ज्ञान को फ़साद और तख़्रीब का साधन बना लिया। खुली बात है कि अगर चोर को लोहारी का फ़न आ जाए तो वह तिजोरी तोड़ना सीखेगा। अब अगर किसी में खुदा का डर और इन्सानों के प्रति हमदर्दी नहीं का रुझान नहीं है और अत्याचार करना उसके स्वभाव में है तो ज्ञान उसके हाथ में अत्याचार करने का यन्त्र दे देगा और उसे गुनाह तथा चोरी के नए–नए ढंग सिखाएगा।

कुछ लोगों ने संस्थाओं को सुधार का माध्यम समझा और अपनी सारी क्षमताएं लोगों की संस्थाओं पर ख़र्च कर दी, नतीजा यह हुआ कि बिगड़े हुए लोगों का एक बिगड़ा हुआ समूह तैयार हो गया। जो कार्य अभी तक अव्यवस्थित रूप से हो रहा था, अब व्यवस्थित रूप से होने लगा। अब षडयन्त्र तथा संस्था के साथ व्यवस्थित रूप से चोरी होने लगीं। लोगों ने व्यवहारिक शिक्षा, अन्रात्मा के सुधार की ओर तो ध्यान नहीं दिया, जैसे बुरे–भले लोग थे उन्हें व्यवस्थित करने ही को काम समझा। परिणाम यह हुआ कि दुर्व्यवहार को नई शक्ति प्राप्त हो गई। मैं तो कहूंगा कि अशिष्टों तथा चोरों व डाकूओं की संस्था न होती तो अच्छा था।

किसी ने कहा कि भाषाओं की भिन्नता तथा अधिकता फ़ित्ना व फ़साद की जड़ है। भाषा एक तथा मुश्तरक होनी चाहिए, इसी में देश की उन्नति, क़ौम की ख़ुशहाली तथा मानवता की सेवा है। लेकिन अगर लोग न बदलें, विचार न बदलें, मन की इच्छाएं तथा रूझान न बदलें, तो भाषा के बदल जाने या बोली के एक हो जाने से क्या ख़ास फ़ायदा होगा?मान लीजिए कि यदि सारी दुनिया के चोर तथा मुजरिम एक भाषा का प्रयोग करने लगें और एक ही बोली बोलें तो उससे दुनिया को क्या फ़ायदा होगा?तथा उससे चोरी तथा जुर्म की क्या रोकथाम होगी?मैं तो सोचता हूं कि इससे बजाए इसके कि चोरी और जुर्म कम हों, ज़्यादा होंगे और मुजरिम की पहचान में और दिक़्क़त होगी।

किसी ने कहा कि समय की सबसे बड़ी मांग तथा मानवता की सबसे बड़ी सेवा यह है कि संस्कृति एक हो जाए, मगर क्या आपको मालूम नहीं है कि यहां सभ्यताएं नहीं टकरातीं, हवस टकराती है, "हम चो मा दीगरे नीस्त" का ख़तरनाक जज़्बा टकराता है। हमारे बहुत से मार्गदर्शक बिना सोचे–समझे कहने लगें हैं कि यदि सारी दुनिया की सभ्यता एक हो जाए तो मानवता की नाव पार लग जाएगी। यदि पूरे देश का कल्चर एक हो जाए तो इस देश के रहने वाले शेर व शकर हो जाएगें। लेकिन दोस्तो! कल्चर का एक होना लाभकारी नहीं, बल्कि दिल का एक होना फ़ायदेमन्द है।

अगर लोग एक दिल न हुए तो एक ज़बान और तहज़ीब होने से कुछ फ़ायदा नहीं। जो लोग पहले से एक ज़बान हैं, और जिनकी सभ्यता एक जैसी है, उनमें कौन सी मुहब्बत व एकता है?क्या वे एक–दूसरे पर अत्याचार नहीं करते?क्या वे एक–दूसरे को धोखा नहीं देते? क्या उनमें लोग एक–दूसरे से परेशान नहीं हैं?क्या एक कल्चर, एक भाषा तथा एक सभ्यता के लोग आपस में नहीं लड़ते?

बहुत से लोगों ने कहा कि पहनावा एक हो, लेकिन जब किसी ज़बरदस्त को गिरेबान पकड़ने की आदत पड़ जाए और जेब कतरने की लत लग जाए, तो क्या वह पहनावे का सम्मान करेगा?क्या वह केवल इस कारण से अपने इरादे से दूर रहेगा कि उसी के जैसे कपड़े दूसरे व्यक्ति के शरीर पर भी हैं?मानवता का सम्मान दिल में न हो तो पहनावे का सम्मान कैसे पैदा होगा?पहनावे का सम्मान तो मनुष्य के कारण है। (क्रमशः)

इस्लाम का पारलौकिक विचार

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

आख़िरत (परलोक) की ज़िन्दगी के लिए किए जाने वाले कामों की बुनियादी शर्त यह है कि उनमें अपने मन का दख़ल न हो, न शोहरत तथा प्रसिद्धि की इच्छा हो, न किसी भौतिक लाभ का दख़ल हो। आदमी सिर्फ़ अल्लाह के लिए काम करे और यह बहुत मुश्किल काम है, आसान काम नहीं है। जन्नत में किसी के लिए यूं ही महल नहीं बन जाएगा बल्कि नियत का सही होना ज़रूरी है। हम नमाज़े पढ़ते हैं, रोज़े रखते हैं लेकिन नमाज़ों और रोज़ों की जो नियत है, अस्ल दारोमदार उस नियत पर है। नियत जितनी मुख़्लिसाना (विशुद्ध) तथा सही होगी, उसी के हिसाब से मामला होगा। वरना ज़ाहिर में चाहे कितनी ही अच्छी नमाज़ हो रही हो, लेकिन अगर उसमें नियत खोटी है या उसमें दुनिया की मिलावट की नियत है, तो उसका वह फ़ायदा नहीं होगा जो बताया गया है। इसलिए कि अल्लाह तआला हर एक के दिल का हाल देख रहा है और दिल ही का अस्ल इम्तिहान है, ज़ाहिर का नहीं है। ज़ाहिर तो एक अलामत है दूसरों के देखने की, जिससे अंदाज़ा होता है कि दिल भी ठीक होगा, जैसेः कोई व्यक्ति किसी के साथ व्यवहार कर रहा है, किसी की सहायता कर रहा है, उसके कई रूप हो सकते हैं, हो सकता है कि इसलिए मदद कर रहा हो कि उससे कोई फ़ायदा उठाना है, या इसलिए मदद कर रहा है कि उसमें दुनिया का कोई मक़सद मिला हुआ है, या यह भी संभव है कि केवल हमदर्दी में एक इन्सान होने के नाते मदद कर रहा हो, जिसकी अल्लाह के यहां बड़ी क़ीमत है, लेकिन अगर अपने आप में फ़ायदे के लिये मदद का काम किया है तो कुछ हासिल नहीं होगा।

हदीस शरीफ़ में आता है कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला बन्दे से पूछेगा कि तुम अपनी ज़िन्दगी में क्या करके आए हो, यानि हमने जो ज़िन्दगी तुम्हें दी थी, और दुनिया में काम करने का जो समय दिया था, साठ या पचास साल जो भी समय था, हमने यह समझकर दिया था कि इतना समय तुम्हारे लिये आवश्यक है, तुम्हारा काम देखने के लिए ज़रूरी है। अब यह बताओ कि तुम दुनिया में कर के क्या आए हो। इसीलिए सबसे पहले ऐसा शख़्स लाया जाएगा जिसने दुनिया में ख़ूब जिहाद किया होगा। उससे मालूम किया जाएगा कि हमने तुमको दुनिया में हिम्मत व साहस दिया था, तुमने उसको कहां इस्तेमाल किया?बन्दा जवाब देगाः मैं तेरी राह में लड़ता रहा, यहां तक कि शहीद हो गया, कहा जाएगाः तुम ग़लत कहते हो, तुमने इसलिए जिहाद में शिरकत की थी कि लोगों में मुजाहिद और बहादुर समझे जाओ, और ऐसा ही हुआ, लिहाज़ा तुमने जो चाहा था, वह तुम्हें मिल चुका, अब यहां तुम्हारे लिये कोई अज्र नहीं है। इसी तरह एक दूसरा शख़्स लाया जाएगा जिसने दुनिया में वाज़ व नसीहत को अपना मश्ग़ला बनाया होगा, उसके दिन व रात उसी काम में गुज़र रहे होंगे, और उससे मालूम किया जाएगा कि तुमने हमारी अता की हुई सलाहियतों से दुनिया में क्या काम किया?वह कहेगाः मैंने लोगों को तेरी राह में ख़ूब वाज़ व नसीहत की, इरशाद होगा; हां तुमने यह सब इसलिए किया कि तुमको बहुत बड़ा आलिम समझा जाए, तुमको बड़ा मुत्तक़ी समझा जाए, सौ लोगों ने तुमको आलिम समझा, मुत्तक़ी समझा और तुमने जो चाहा वह तुम्हें दुनिया में मिल गया, लिहाज़ा यहां तुम्हारे लिये कुछ नहीं है। इसी तरह एक मालदार शख़्स हाज़िर किया जाएगा और उससे भी इसी तरह का सवाल होगा, वह जवाब देगा; हमें दौलत हासिल हुई तो हमने तेरी राह में ख़ूब ख़र्च किया और सबकी मदद की। कहा जाएगाः हां यह सब तुमने इसलिए किया कि लोग तुमको सख़ी समझें और लोगों ने तुमको सख़ी समझा, गोया तुमने जो चाहा वह दुनिया ही में तुम्हें मिल गया, लिहाज़ा यहां तुम्हारे लिये कुछ भी नहीं, तुम्हें जो मिलना था, वह मिल गया, दुनिया में तुम्हें लोगों ने ख़ूब सख़ी समझा।

ऊपर दी गयी हदीस में तीन तरह के लोगों (मुजाहिद, आलिम, मालदार) का ज़िक्र है और उन तीनों अंजाम यह बताया गया है कि फिर उनको घसीटकर औंधे मुंह जहन्नम में डाल दिया जाएगा। इससे मालूम होता है कि अस्ल मामला नियत का है। हम जो भी काम करते हैं, उसमें अगर अल्लाह के लिये नियत है तो उस काम की क़ीमत है और आख़िरत में उस काम का असर भी ज़ाहिर होगा। यानि अल्लाह तआला आपके लिये वहां मकान बना देगा, नदियां बहा देगा, महल तैयार कर देगा और तरह–तरह के मेवे और दूसरे इन्तिज़ाम कर देगा। मगर यह सबकुछ यहां किए गए काम के ज़रिए मुमकिन होगा।

वहां ऐसा कोई काम नहीं किया जा सकता है जिससे यह सब नेमतें हासिल हों बल्कि यहां का काम वहां की पैदावार है। वहां आदमी को ख़ुद पैदावार नहीं करनी होगी बल्कि अल्लाह तबारक व तआला पैदा करेगा, लेकिन यहां के अमल से पैदा करेगा। अगर तुमने यहां कुछ बोया है तो वहां काटोगे, वरना वहां काटने के लिए कुछ नहीं मिलेगा।

सूरह कहफ़ इस बात को वज़ाहत से बताती है कि तुम लोग दुनिया को अस्ल समझ रहे हो, हालांकि दुनिया कुछ नहीं है। यह यहीं रह जाएगी, बस आपका अमल यहां से जाएगा, जैसा कि आपका अमल होगा वैसा वहां पहुंचेगा। लिहाज़ा इस बात को समझो और अपने को इस धोखे में न रखो जो धोखा तुमको है। इसी धोखे को दूर करने के लिए अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत को दिखाने वाले कई वाक़्ये कुरआन मजीद में ज़िक्र किए हैं। जैसेः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा; परवरदिगार! हम देखना चाहते हैं कि आप मुर्दे को कैसे ज़िन्दा करते हैं?इरशाद हुआः तुम्हें यक़ीन नहीं है, फ़रमायाः परवरदिगार! यक़ीन पूरा है, लेकिन देखने में ज़रा तक़वियत हो जाती है। इरशाद हुआः तुम चार परिन्दे लेकर उनके टुकड़े–टुकड़े करके अलग–अलग पहाड़ों की चोटियों पर फैला दो, फिर उन्हें आवाज़ लगाओ। अतः उन्होंने ऐसा ही किया और आवाज़ लगाई तो सारे टुकड़े उड़ते हुए आए और आपस में जुड़कर परिन्दे बन गए। अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत का एक करिश्मा यहां दिखाया और कुरआन मजीद में इसका ज़िक्र किया ताकि जो लोग इस कुदरत के बारे में धोखे में हैं वह होश के नाख़ून लें। लेकिन यह चीज़ अल्लाह हर एक को नहीं दिखाता, बल्कि यह करिश्मा उसको दिखाया जिसको पूरा यक़ीन था, चूंकि इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला की ज़ात पर पूरा यक़ीन था, इसलिए उनकी तश्फ़्फ़ी के वास्ते अल्लाह तआला ने दिखा दिया।

अल्लाह तआला ने ग़ैब पर ईमान लाना मुक़र्रर किया है। ईमान बिल ग़ैब का मतलब है जो ग़ैब पर यक़ीन रखते हैं, यानि उनके सामने ज़ाहिरी दलीलें नहीं हैं, फिर भी वह मान रहे हैं, इसलिए कि अल्लाह ने कहा है और जिस नबी के ज़रिये कहा है वह नबी सच्चा है। नबी का कहा अल्लाह का कहा है। और जब अल्लाह ने कहा तो उसमें कोई शक व शुब्हे की बात ही नहीं है। अगर आदमी के सामने आग लग जाए और कहा जाए हम उसमें तुमको डाल देंगे तो आदमी भागेगा, इसलिए कि उसको यक़ीन है कि अगर उसे आग में डाला गया तो वह जल जाएगा। मानो भागना केवल इसलिए है कि शायद वह हमको आग में डाल देंगे। लेकिन जब इन्सान के सामने जहन्नम की आग का ज़िक्र आता है तो आदमी पर कोई असर नहीं पड़ता, और जब उसके सामने यह ज़िक्र आता है कि अगर आदमी दुनिया में सूद खा रहा है तो मानो वह पाख़ाना खा रहा है, तो यहां की ज़िन्दगी में पूरा यक़ीन न होने की वजह से सूद का माल गन्दगी नहीं लगता। यहां वह माल मज़ेदार लगता है। लेकिन जब यह काम आलमे आख़िरत तक पहुंचेगा, तब यह काम गन्दगी नज़र आएगा और वहां हर चीज़ ज़ाहिर होगी जो दुनिया में न हुई थी। अल्लाह तआला ने अपने नबी के ज़रिए इस काम को ग़लाज़त बताया है तो वहां यह काम ग़लाज़त ही ज़ाहिर होगा। रसूलुल्लाह स0अ0 को मेराज में यह चीज़ें दिखाईं भी गईं और अज़ाब की अलग–अलग शक्लें भी दिखाईं गईं। जब आपने उनके बारे में पूछा तो बताया गया कि यह व्यक्ति फ़लां काम करता था उसकी सज़ा मिल रही है। यह व्यक्ति फ़लां काम करता था उसकी सज़ा मिल रही है। दुनिया की ज़िन्दगी का हर काम नियत के लिहाज़ से है जो कि इस दुनिया में नहीं बल्कि आख़िरत में मुजस्सम होकर सामने आएगा इस दुनिया में उसके अख़्फ़ा की वजह इन्सानों की आज़माइश है ताकि यह साफ़ हो जाए कि तुम अल्लाह तआला की बात मानते हो या नहीं, उसको राज़िक़ मानते हो या नहीं, उसको अपना मालिक़ व ख़ालिक़ मानते हो या नहीं और यह आख़िरत का मामला उसी के हाथ में है इस हक़ीक़त को मानते हो या नहीं।

जो लोग आख़िरत की ज़िन्दगी पर यक़ीन नहीं रखते वह मोमिन नहीं है। उनका मानना है कि जो कुछ भी है वह सब इसी दुनिया में है। आख़िरत का तसव्वुर उनके ज़हन ही में नहीं आता, और बग़ैर तसव्वुरे आख़िरत के काम नहीं बनता यानि इन्सान ईमान वाला नहीं हो सकता, लिहाज़ा ऐसे लोगों को उसका नुक़सान दुनिया में ज़ाहिर नहीं होगा, इसलिए कि अल्लाह तआला ने इन्सानों के आज़माने के लिए दुनिया में ज़ाहिरी चीज़ों ही को रखा है। इसलिए यहां आदमी मज़े करेगा। ग़लत काम पर ख़ुश होगा। गुनाह करके ख़ुश होगा क्योंकि उसको मज़ा आ रहा है और अगर समझाया भी जाए तो बड़ी आसानी से कह देगा कि आख़िरत का मामला आख़िरत में देखा जाएगा, यानि इसका मतलब यह हुआ कि हमें आख़िरत पर पूरा यक़ीन नहीं है। हमें जिन बातों पर यक़ीन होता है, वह ज़ाहिरी बातों को देखकर ही होता है।

जीवन का केन्द्र

मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह०)

कुरआन मजीद जीवन का एक व्यापक तथा संतुलित विचार प्रस्तुत करता है, अल्लाह तआला का इरशाद है: "एक हमारे रब हमें दुनिया में भी भलाई अता फ़रमा और आख़िरत में भलाई अता फ़रमा।" (सूरह बक़राः 201)

कुरआन मजीद में दुनियादारों का हाल यूं बताया गया है: "एक हमारे रब हमें (बस) दुनिया में दे दे और उनके लिए आख़िरत में हिस्सा नहीं।" (सूरह बक़राः 200)

यानि ऐसे लोगों का नज़रिया यह है कि हमको सबकुछ दुनिया ही में मिल जाए, रही आख़िरत उसको देखा जाएगा। जबकि कुरआनी नज़रिया यह है कि हर शख़्स की दुनिया भी अच्छी हो और आख़िरत भी अच्छी हो। दुनिया अच्छी होने के बारे में कुरआन कहता है: "और दुनिया में अपना हिस्सा न भूलो" (सूरह क़ससः 77) यानि दुनिया में भी जो हमारे रिज़्क़ का हिस्सा है वह हासिल करना भी ज़रूरी है। अलबत्ता ओवरलोड नहीं होना नहीं चाहिए। ख़ुलासा यह निकला कि हम दुनिया को इस एतबार से अख़्तियार करें और अस्लन हमारे सामने आख़िरत हो। वास्तव में आख़िरत और दुनिया का बहुत गहरा संबंध है। आख़िरत दुनिया की खेती है। हम यहां जो बोएंगे आख़िरत में काटेंगे। लिहाज़ा हमें यहां खेती करनी है, यहां खाना नहीं है, लेकिन हमसे उसी में ग़लती हो जाती है, हम चाहते हैं कि हम यहां जो कुछ खेती करें सब खा लें, लेकिन ऐसा नहीं है, बल्कि हम यहां जो करेंगे वैसा ही उसका नतीजा आख़िरत में मिलेगा, लिहाज़ा दुनिया व आख़िरत के बारे में हमारी फ़िक्र सही होनी चाहिए। अगर यह ठीक हो जाए तो हमारा मरना या जीना ठीक हो जाए और हमारा घर जन्नत का नमूना बन जाए।

सहाबा किराम (रज़ि0) का हाल यह था कि खाने को कुछ नहीं था। मगर हर क़िस्म की कुर्बानी के लिए हर वक़्त तैयार थे। लेकिन आज हमारा हाल यह है कि दस्तरख़्वान पर कई–कई खाने रखे हुए हैं और अदना दर्जे की कुर्बानी पर भी हम आमादा नहीं होते। ख़ुद हुज़ूर स0अ0 के बारे में आता है कि आपके दस्तरख़्वान पर कभी दो खाने जमा नहीं हुए। अन्दाज़ा लगाइए सरवर–ए–कौनेन स0अ0 के दस्तरख़्वान पर कभी दो खाने जमा नहीं हुए और कभी–कभी कई–कई महीने खाने के लिए कुछ नहीं होता था, मगर कभी भी आपकी ज़बान पर शिकायत नहीं आई। लेकिन आज हमारा हाल इससे बिल्कुल अलग है। इसीलिए आप स0अ0 ने फ़रमाया था कि मुझे तुम्हारे ऊपर फ़ाक़े का डर नहीं है लेकिन मुझे इस बात का डर है कि दुनिया तुम पर छा जाएगी और तुम्हें हलाक कर देगी जैसा कि उसने तुमसे पहले के लोगों को भी हलाक किया है। दुनिया देखने में बड़ी ख़ुशनुमा है लेकिन जो इसमें उलझेगा, वह गिरफ़्तार होता चला जाएगा, हां जो उसके साथ वैसा ही मामला रखेगा जो रखना चाहिए तो फिर वह ठीक रहेगा।

किसी ने ख़ूब कहा है कि दुनिया और आख़िरत दो बीवी की तरह हैं, अगर एक को आगे कर दिया तो दूसरी नाराज़ हो जाएगी, यानि दुनिया एक बीवी है और आख़िरत दूसरी बीवी है। ज़ाहिर है कि दुनिया की बीवी फ़ना हो जाने वाली है और यह बड़ी ख़ूबसूरत और बड़ी बदबूदार है और आख़िरत की बीवी बड़ी ख़ूबसूरत है और बिल्कुल ऐसी अज़ीमुश्शान है कि आदमी देख ले तो दंग रह जाए। जैसा कि हदीस में भी आता है कि अगर आख़िरत की हूर का एक नाख़ून भी दुनिया में आ जाए तो पूरी दुनिया चमक जाए। इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि आख़िरत की पूरी ज़िन्दगी में अल्लाह ने कैसा हुस्न रखा है, लिहाज़ा जो शख़्स इस आख़िरत वाली बीवी का साथ निभाएगा वह अक्सर वक़्त उसी की फ़िक्र में रहेगा और कामयाब हो जाएगा।

इन्सान की कमज़ोरी यह है कि वह दुनियावी चमक–धमक से जल्दी मुतास्सिर हो जाता है। वह देखता है कि बज़ाहिर यह दुनिया अच्छी लग रही है। यहां के बाज़ार और शापिंग माल क़ाबिले कशिश हैं और फिर उन्हीं के चक्कर में फंस के रह जाता है। इसीलिए हदीस में है: यानि बाज़ार या शापिंग माल सबसे बुरी जगह हैं और सबसे अच्छी जगह मस्जिद है। इसीलिए आप स0अ0 ने फ़रमायाः सबसे अच्छा आदमी वह है जिसका दिल मस्जिद में लगा हो। अगर मार्केट के लिए भी निकला है तो उसका दिल मस्जिद में लगा रहे, लेकिन हमारा ख़्याल बिल्कुल अलग है, हम जाते मस्जिद की तरफ़ हैं लेकिन दिल शापिंग में लगा रहता है। हज़तर शाह याकूब साहब मुजद्दिदी रह0 ने एक साहब से पूछाः बताओ दो चीज़ों में क्या बेहतर है; क्या यह कि तुम बाहर हो और दिल मस्जिद में लगा रहे या कि तुम मस्जिद में हो और दिल

बाहर रहे?उस शख़्स ने जवाब दियाः जो ख़ुद बाहर हो और दिल मस्जिद में हो।

अल्लाह ने दुनिया में इन्सान को फ़ायदा उठाने के लिये जो आज़ा अता किये हैं, यह सब एक अमानत है, और हम उनको दुनिया की ज़िन्दगी में जैसा इस्तेमाल करेंगे, आख़िरत की ज़िन्दगी में वह हमारे बारे में वैसी ही गवाही देंगे। लिहाज़ा आंख कैमरा है, कान रिकार्डर हैं, ज़बान एक बटन है जो हुक्मे इलाही के फ़ौरन बाद तमाम बातें बयान कर देगी। हमारी ज़बान से वही बात निकलेगी जो कानों ने सुनी हो, लिहाज़ा अगर कान में सही चीज़ें जाएंगी, तो ज़बान से सही अदा होगा और जब आंखों ने अच्छी तस्वीरें महफ़ूज़ की होंगी तो अच्छी चीज़ें ही सामने आएंगी। लेकिन आज सूरतेहाल अलग है। हमारे जितने नवजवान क्रिकेट देखते हैं, अल्लाह माफ़ करे कि ज बवह ख़ूबसूरत नवजवान को खेलते देखने वाली तस्वीरें देखते हैं तो वह तस्वीरें उनके ज़हनों में पेवस्त हो जाती हैं और उसी की तरह जो नाचने वालों को देखते हैं उनके ज़हनों में उनकी तस्वीरें स्बत हो जाती हैं, इसका नतीजा यह होता है कि हमें अपनी नमाज़ों में भी वही चीज़ें नज़र आती हैं। हम जब नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े होते हैं तो वही पोस्टर की गंदी तस्वीरें गर्दिश करती हैं। हमें बहुत से नवजवान ऐसे मिले जिन्होंने अपने इस मर्ज़ का रूहानी इलाज मालूम किया ि कइस लानत से कैसे बचा जाए?ज़ाहिर है इसका पहला इलाज यही है कि ऐसी लानतों को देखना बन्द कर दिया जाए, अल्लाह वाालें की सोहबत में बैठना शुरू किया जाए, जब अल्लाह वालों की सूरतें देखेंगे और उनके पास जाकर बैइेंगे, और उनसे मुहब्बतकरेंगे तो फिर उन्हीं की सूरत हमारे सामने रहेगी। जिहाज़ा जिन्होंने भी गन्दी बातें सुनी हैं, और अच्छी बातें सुनीं, और अच्छी किताबें पढ़वाकर सुनीं, जो कि गन्दी चीज़ों को दूर कर सकें और ज़माने माज़ी में इन गन्दी चीज़ों के लिए जितना वक़्त गुज़ारा है, उससे ज़्यादा अच्छी चीज़ों में वक़्त गुज़रे।

अगर मुहब्बत अल्लाह और उसके रसूल स0अ0 के अलावा किसी और से होगी तो क़यामत के दिन वह उसी के साथ होगा। यह इतनी ख़तरनाक बात है कि इससे बड़ी और कोई बात नहीं हो सकती है। मैं एक जगह गया वहां अलग–अलग स्वभाव के लोग थे, मैंने कहाः अल्हम्दुलिल्लाह यहां तो सब बड़े लोग मौजूद हैं, मैं सिर्फ़ एक बात कहकर रुख़्सत होता हूं कि तुम लोग अपने दिलों के हाल का जायज़ा लो कि तुम्हारा दिल कहां है। अगर झांककर देखा जाए तो पता चलेगा कि हमारा दिल किसी खेलने वाले के साथ लगा हुआ है या नाचने वाली के साथ लगा हुआ है। लिहाज़ा समझ लीजिए कि अगर हमारी यही हालत रही तो हमारा हश्र भी उन्हीं के साथ होगा जिनसे हमें मुहब्बत है और यह बड़ी ख़तरनाक बात है। हमने कहाः दिल बेशक मुहब्बत की जगह है और किसी को देने के लिए ही है, लेकिन हमने और आपने अपने दिल को किसी ग़लत जगह दे दिया है। दिल देने के हक़ीक़ी हक़दार अल्लाह और उसके रसूल ही हैं।

अख़्तर शीरानी की मुहब्बते रसूल का वाक़्या मशहूर है। उनके हाथों में शराब की बोतल थी और उसी हालत में उनसे किसी ने पूछाः जोश मलीहाबादी के बारे में आपकी क्या राय है? उन्होंने कहाः उसके यहां तुक–बन्द बहुत हैं, उसने बहुत से अल्फ़ाज़ रट लिए हैं और उन्हीं को जोड़ता चला जाता है। फिर किसी ने जिगर मुरादाबादी के बारे में जमाः कहने लगे गवय्या है, बस अच्छा गा लेता है। फिर किसी ने अल्लामा इक़बाल के बारे में पूछाः तब भी ऐसा ही कुछ जवाब दिया। उसी मजलिस में एक नवजवान यह सवाल भी कर बैठाः हज़रत मुहम्मद स0अ0 के बारे में आपकी क्या राय है?बस यह जुम्ला सुनना था कि वह अपना नशा भूल गए और शराब की बोतल दे मारी और कहाः कम्बख़्त! तुम मेरा आख़िरी सहारा भी मुझसे छीनना चाहते हो, वह मेरी मुहब्बतों का मरकज़ हैं। ज़ाहिर में यह वह शख़्स था जिसको लोग बेईमान समझते थे, लेकिन जब ऐसा संगीन सवाल किया गया तो उन्होंने अपनी हालत पर रहम खाया और कहाः कम्बख़्त! ऐसी नापाक महफ़िल में तूने ऐसे पाक आदमी का नाम लेने की जुर्रत कैसे की?ज़ाहिर है कि शराब के न शे में भी उनकी मुहब्बत का यह आलम था।

आज लोग ईमान वाले हैं और उसी ईमान का दर्द रखते हैं। उनकी हालत देख लीजिए, वह अल्लाह के रसूल स0अ0 से मुहब्बत कर रहे हैं या आप स0अ0 की शान में गुस्ताख़ी कर रहे हैं और ईमान को पामाल कर रहे हैं। हुज़ूर–ए–अकरम स0अ0 की हालत यह थी कि उन्हें कुछ मयस्सर न था, मगर उम्मत की ख़ातिर हर कुर्बानी को तैयार थे और हमारा हाल यह है कि, सबकुछ है लेकिन हमारी ज़िन्दगी बिल्कुल जानवरों वाली ज़िन्दगी हो गयी है। सोचने का मक़ाम है कि हमारा अंजाम क्या होगा!

राम मंदिर के लिए बेताबी का ढोंग

मौलाना असरारुल हक़ क़ासमी (रह०)

बाबरी मस्जिद राम मंदिर मुक़द्दमे की सुनवाई जनवरी तक टाल करके सुप्रीम कोर्ट ने साफ़ संदेश दिया कि इस महत्वपूर्ण मामले में जल्दबाज़ी उचित नहीं है। सुप्रीम कोर्ट की इस कार्यवाही के बाद पक्षकारों के पास इंतिज़ार के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता है। मुस्लिम पक्ष जो शुरू ही से इस बात पर क़ायम है कि उसे अदालत का निर्णय हर हाल में मान्य होगा चाहे उसके पक्ष में हो या पक्ष में न हो। अदालत की ओर से इस देर को भी न केवल स्वीकार किया, बल्कि उसके पीछे संभावित मस्लहत की भी प्रशंसा की कि शायद अदालत इस मुक़द्दमे के फ़ैसले को किसी भी गिरोह या जमाअत के लिये राजनीतिक नफ़े या नुक़सान का साधन बनने से बचाना चाहती है।

लेकिन दूसरा पक्ष, जो उसके पक्ष में निर्णय न आने की सूरत में भी विवादास्पद स्थल पर ही मंदिर बनाने का इरादा ज़ाहिर करता रहा है, अदालत की इस मस्लहत पूर्ण कार्यवाही से इस हद तक नाराज़ हुआ है कि उसने संविधान के इस मूलभूत स्तम्भ के सम्मान को भी ताक़ पर रख दिया और तुरन्त राम मंदिर निर्माण का शोर मचाना शुरू कर दिया है। अफ़सोस की राम मंदिर निर्माण के लिए हद दर्जे बेताबी का इज़हार करने वाली भीड़ में साधू, संत, महात्मा, अनगिनत भगवा गिरोहों के भारी–भरकम व्यक्ति और सत्ता पक्ष के लीडर ही नहीं बल्कि एक केन्द्रीय मंत्री भी नज़र आए, जिन्होंने देश के संविधान व क़ानून की रक्षा करने की शपथ ले रखी थी। जी हां केन्द्रीय मंत्री गिरिराज सिंह, जो अपने ज़हरीले तथा मुस्लिम विरोधी भाषणों के लिये चर्चित हैं, ने सुनवाई को जनवरी तक टाल देने का फ़ैसला आते ही कहा कि राम मंदिर निर्माण के सिलसिले में हिन्दुओं के सब्र का पैमाना भर रहा है। श्रीराम हिन्दुओं की आस्था का केन्द्र बिन्दु हैं और उन्हें अंदेशा है कि यदि उनके सब्र का बांध टूट गया तो क्या होगा। इस बात के द्वारा जहां अदालत पर यह दबाव डालने की साफ़ कोशिश की गई है कि है वह न केवल इस मामले में जल्दबाज़ी करे, बल्कि हिन्दुओं की आस्था का ध्यान रखते हुए ही कोई निर्णय सुनाए, वहीं मुसलमानों को भी धमकी दी गयी है कि यदि राम मंदिर निर्माण की राह में कोई बाधा उत्पन्न की गयी तो उनकी ईंट से ईंट बजा दी जाएगी।

मंत्री महोदय की संविधान व क़ानून की धज्जियां उड़ाने की पुरानी आदत है जिसके दर्जनों उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं, लेकिन इस विषय में अयोध्या के संबंध से ही उनका एक दूसरा हालिया बयान नक़ल करना ज़रूरी लगता है, जिसमें उन्होंने मुसलमानों को यह याद दिलाते हुए कि वह बाबर की औलाद नहीं बल्कि भगवान राम की नस्ल से संबंध रखते हैं, धमकी दी थी कि यदि वे राम मंदिर निर्माण की राह में बाधा बने तो हिन्दु अयोध्या को तो ताक़त के ज़ोर पर प्राप्त ही कर लेंगे, तथा इसके साथ–साथ काशी तथा मथुरा के विवादित स्थलों को भी ले लेंगे। उन्होंने यह भी कहा था कि शिया वर्ग ने राम मंदिर निर्माण के लिए अपना समर्थन प्रस्तुत किया है। अतः सभी मुसलमानों को भी ऐसा ही करना चाहिए।

दरअस्ल सत्ताधारी दल बीजेपी तथा समस्त भगवा गिरोह आश्वस्त थे कि बाबरी मस्जिद–राम मंदिर जन्म भूमि मामले की सुनवाई शुरू हो गई तो पांच राज्यों में होने वाले नये चुनाव के साथ–साथ 2019 के संसदीय चुनावों में भी उन्हें इसका लाभ होगा। लेकिन उसी समय सर्वोच्च न्यायालय ने उसकी सुनवाई जनवरी तक टाल कर एक तरह से इस बात को यक़ीनी बना दिया है कि कोई भी राजनीतिक पार्टी कम से कम अगले संसदीय चुनाव तक इस मामले का राजनीतिक प्रयोग न करे। लेकिन राम मंदिर का मामला जो उस पार्टी के

उरूज में केन्द्रीय महत्व रखता है तथा लगभग सभी चुनावों में फ़ायदा पहुंचाता रहा है। आगे के चुनावों में भी पार्टी की सफलता के लिये यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

इसका कारण यह है कि केन्द्र में मज़बूत इक़्तिदार हासिल होने के बावजूद बीजेपी की सरकार देश व राष्ट्र की कोई अदना सी भलाई व उन्नति करने में पूरी तरह से नाकाम रही है। उसके सभी वादे धरे के धरे रह गए हैं, बल्कि उनके अधिकतर वादे पूरे न होने के कारण वे आज मज़ाक का एक बड़ा विषय बन गये हैं। उल्टा हुकूमत के बहुत से आक़बत नाअंदेश इक़दामात और नाआज़मूदाकारी जैसे नोटबन्दी और जीएसटी को लागू करना, पेट्रोल, डीज़ल और रसोई गैस की क़ीमतों पर कन्ट्रोल रखने, मंहगाई पर क़ाबू पाने और बेरोज़गारों को रोज़गार उपलब्ध कराने में पूरी तरह असफल रहने ने जनता की कमर तोड़ कर रख दी है। इन परिस्थितियों में इस पार्टी को अब केवल श्रीराम का ही भरोसा है और इसीलिए मंदिर के निर्माण के लिए बेताबी का अदीमुल मिसाल मुज़ाहिरा हर रोज़ देखने में आ रहा है।

सबसे पहले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने राम मंदिर के निर्माण के लिये संसद में क़ानून बनाने का शोशा छोड़ा। भगवा टोली के दूसरे सालारों ने अपने–अपने अंदाज़ में यही राग अलापना शुरू कर दिया। आरएसएस से संबंध रखने वाले राज्य सभा में बीजेपी के सांसद राकेश सिन्हा ने तो संसद के शीतकालीन सत्र में राम मंदिर निर्माण के लिये प्राइवेट मेम्बर बिल लाने का इरादा ज़ाहिर किया है। लगभग सवा सौ हिन्दु संस्थाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले तीन हज़ार संतो की एक मीटिंग में ऐलान किया गया कि कोई आर्डिनेन्स लाए बिना ही दिसम्बर से अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण शुरू कर दिया जाएगा।

विश्व हिन्दु परिषद की लीडर साध्वी प्राची ने तो यह भी कहा कि जिस तरह बाबरी मस्जिद की शहादत के लिए किसी से इजाज़त नहीं ली गयी थी उसी तरह राम मंदिर निर्माण के लिये भी किसी की आज्ञा की आवश्यकता नहीं है। मस्जिद की शहादत की तारीख़ 6 दिसम्बर से राम मंदिर निर्माण शुरू कर दिया जाएगा। बयानों का एक न थमने वाला सिलसिला है जो रुकने का नाम नहीं ले रहा है और मुक़द्दमा अदालत में विचाराधीन होने के बावजूद यह लोग बलपूर्वक राम मंदिर निर्माण के लिये बेताबी का प्रदर्शन कर रहे हैं।

संविधान व क़ानून विशेषज्ञों के अनुसार यदि मोदी सरकार मंदिर निर्माण के लिए संसद में कोई बिल लाती है या राकेश सिन्हा ने प्राइवेट मेम्बर बिल पेश किया तो बिल को क़ानून बनने की प्रकिया में लगभग आठ–नौ माह का समय चाहिए होगा और इस बीच संसदीय चुनाव हो जाएंगे। सत्ताधारी दल को यह समस्त प्रक्रिया अच्छी तरह मालूम हैं। भगवान राम में उनकी कितनी आस्था है तथा मंदिर निर्माण को लेकर वे कितने गंभीर हैं यह कहना मुश्किल है। लेकिन आज मंदिर निर्माण के लिये जिस बेताबी का प्रदर्शन किया जा रहा है वह वास्तव में केवल एक ढोंग तथा ड्रामा है तथा अपने वोटरों को इस ख़ुशगुमानी में लगातार पड़ा रहने देने की कोशिश है कि उनकी सरकार राम मंदिर निर्माण के लिए प्रयासरत है। देखना यह है कि बीजेपी के वोटर इस चाल को समझते हैं या एक बार फिर वे राम के नाम पर छलावे का शिकार हो जाएंगे।

काश कि वह तमाम गिरोह जो आज मंदिर निर्माण के लिये बढ़–चढ़ कर बयानबाज़ी कर रहे हैं तथा इस बात की भी परवाह नहीं कर रहे हैं कि इससे अदालत तथा संविधान का अपमान होता है। काश कि उन्होंने सरकार पर अपना यह ज़ोर व दबाव सकारात्मक तथा निर्माणी वादों तथा दावों को अमली जामा पहनाने हेतु बनाया होता तथा उसके परिणामस्वरूप सरकार देश व राष्ट्र की उन्नति के लिए कुछ अच्छे क़दम उठा लेती तो आज एक बार फिर वह केवल राम भरोसे न होती। राम मंदिर निर्माण की बातों से अयोध्या में एक भय का माहौल है और यदि यह चिंगारी यूं ही सुलगती रही तो ख़तरा है कि देश में एक बार फिर हिन्दुओं तथा मुसलमानों के बीच नफ़रत तथा हिंसा की गरमबाज़ारी होगी जो देश तथा हर धर्म के लोंगो के लिये केवल और केवल नुक़सान का कारण होगा।

क्रमवार:

त्याग व समानता क्या है?

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

त्याग की पराकाष्ठा: "और इस पर किसी का एहसान नहीं जिसका बदला (उसको) दुनिया हो, सिवाए अपने रब्बे आला की रज़ामन्दी के।"

ऐसा नहीं है कि ख़र्च करने वाले शख़्स के ऊपर किसी का कोई एहसान है, उसके साथ किसी ने कभी कोई सुलूक किया है, कुछ दे दिया है, और गोया वह उसका बदला उतार रहा है, ऐसा बिल्कुल नहीं है, बल्कि वह जो कुछ भी दे रहा है, महज़ अल्लाह की रज़ा के लिए दे रहा है, नाम व नमूद या बदले के लिए नहीं दे रहा है। जैसा कि आजकल हमारे बाज़ इलाक़ों में शादी के अन्दर बाक़ायदा डायरियों में पैसे लिखने का एहतिमाम होता है और याद रखा जाता है हमारी बेटी को फ़लां ने पांच हज़ार रुपये का सामान दिया था, लिहाज़ा अब जब उनका नम्बर आएगा तो यह भी पांच हज़ार का सामान देंगे, और यहां यह पांच हज़ार रुपये इसलिए ख़र्च करेंगे कि उस शख़्स ने भी उनके यहां इतने का ही सामान दिया था। गोया यहां अल्लाह की रज़ा पेशे नज़र नहीं है। ज़ाहिर है ऐसे लेन–देन से क्या हासिल है। अल्लाह के यहां वही अमल कुबूल होता है जो उसकी रज़ा की ख़ातिर किया जाए।

इन्सान जब ख़ालिस अल्लाह के लिए माल देगा, इसलिए नहीं देगा कि उसने हमारे साथ फ़लां एहसान किया था तो हम उसका बदला उतार रहे हैं, तो उसका यह अमल बिल्कुल ख़ालिस और ऐसा निखरा हुआ होगा कि उसमें ज़रा भी किसी क़िस्म की मिलावट नहीं होगी, इसलिए कि वह अपना माल सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए दे रहा है और जिसको दे रहा है उससे कुछ लेना है न देना है और न ही पहले उससे कोई मसला मुताल्लिक़ था, और न आगे कोई उम्मीद है, वह सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए दे रहा है। वाक़्या यह है कि यह अमल अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा पसंद है। सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए देना बहुत आला तरीन आमाल में से है।

अच्छे व्यवहार की शिक्षा: इसमें भी कोई शक नहीं है कि अगर किसी ने आपके साथ एहसान किया है, तो हदीस में आता है कि आप उसके साथ ज़रूर सुलूक कीजिए, अगर आपको किसी ने हदिया दिया तो आप भी हदिया दीजिए, यह शराफ़त की बात है: इरशाद है:

"हुस्न (अमल) का बदला हुस्न (करम) के सिवा और क्या है।"

आपके साथ कोई शराफ़त का मामला करता है, सुलूक करता है, तो आपको भी चाहिए कि उसके साथ अच्छा मामला करें, अल्लाह तआला के यहां इसमें भी बहुत अज्र है। लेकिन वह हो अमल है जिसकी बात ऊपर चल रही थी, वह बहुत आगे का अमल है, इसलिए कि जिसको माल दिया जा रहा है उससे कोई संबंध नहीं है, न पहले लेन–देन का कोई ऐसा मामला जुड़ा रहा है, और न आगे उम्मीद है, लेकिन सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए दे रहा है, यह वाक़ई में बहुत आला दर्जे की चीज़ है, और अल्लाह तआला के नज़दीक बहुत पसंदीदा काम है।

कुर्बे खुदावन्दी का मदार: "तुम हरगिज़ पूरी नेकी को नहीं पा सकते जब तक कि तुम उस चीज़ को न ख़र्च कर दो जो तुम्हें पसंद है और तुम जो भी ख़र्च करते हो अल्लाह उसको ख़ूब जानता है।"

आयत में बताया जा रहा है कि जो नेकी बहुत आला दर्जे की है, जिससे अल्लाह का कुर्ब हासिल होता है, उस नेकी तक तुम उस वक़्त तक नहीं पहुंच सकते, जब तक कि तुम अल्लाह की राह में अपनी वह चीज़ न ख़र्च कर दो जो तुम्हें महबूब है और तुम्हें पसंद है, और जिससे तुम्हारा दिल लग गया है।

आयत का अगला टुकड़ा क़ाबिले तवज्जो व क़ाबिले ग़ौर है, जिसमें कहा गया है कि "तुम जो भी ख़र्च करते हो, अल्लाह उसको ख़ूब जानता है" इसलिए कि हो सकता है कि मैंने राहे ख़ुदा में अपने दिल का टुकड़ा दे दिया, मैंने वह चीज़ दे दी जो मुझे सबसे ज़्यादा पसंद थी, मुझे उससे ज़्यादा रग़बत थी, लेकिन आदमी को यह समझ लेना

चाहिए कि वह यह बात दुनिया वालों से कहे तो कह दे, अलबत्ता अल्लाह के यहां सब हाल महफ़ूज़ है और उसके इल्म में भी है। इसीलिए अल्लाह ने वाज़ेह कर दिया कि इस सिलसिले में उसको धोखा मत देना, तुम जो भी ख़र्च कर रहे हो वह चीज़ तुम्हारे नज़दीक कैसी है, लोगों से तुम कुछ भी कह दो कि मैंने अपनी सबसे क़ीमती चीज़ दी है, लेकिन अल्लाह जानता है कि उसकी क़ीमत तुम्हारे दिल में कितनी है, तुम उसे कितना क़ीमती समझ रहे हो, लिहाज़ा यह ख़्याल रहे कि तुम जो कर रहे हो सब अल्लाह के सामने है, सारा कच्चा–चिट्ठा उसके पास है, तुम दुनियावालों को जो चाहे धोखा दे दो, उनको तड़ी पढ़ा दो, लेकिन अल्लाह के यहां सबकुछ मौजूद है, वहां धोखा नहीं चलता, इसलिए आदमी जो भी काम करे सोच–समझ कर करे कि हम अल्लाह के लिए काम कर रहे हैं, हमें जिसकी बारगाह में यह काम पेश करना है, वहां पाक–साफ़ अमल मतलूब है, हदीस में आता है कि:

"अल्लाह तआला पाक है और वह पाक चीज़ ही कुबूल करता है।"

अल्लाह तैय्यब है यानि हर तरह के नुक़्स से पाक है, ज़ाहिर है कि उसकी ज़ात बहुत बुलन्द व बाला है। हर तरह के ऐब व नुक़्स से पाक है। लिहाज़ा वह उसी चीज़ को पसंद करता है जो बिल्कुल पाक–साफ़ हो। जिसमें ऐब न हो। और जिसके अन्दर ऐब हों, चाहे वह किसी भी तरह के हों, ज़ाहिरी ऐब हों या बातिनी, अल्लाह ऐसे काम को कुबूल नहीं करता। उसके यहां बिल्कुल खरा अमल होना चाहिए। अगर उसके अन्दर खोट है तो यह बहुत मुमकिन है कि आदमी दुनिया में जिसको चाहे धोखा देदे , सोने में खोट मिलाकर बेचे, लेकिन याद रहे कि अल्लाह के यहां खोटा काम कुबूल नहीं होता, वहां खरा काम ही कुबूल होता है, इसलिए नियत और काम बिल्कुल सही होना चाहिए।

मतलूब खुदावन्दी:

यह अलग बात है कि अल्लाह तआला ग़फ़ूर और रहीम है। वह बहुत ज़्यादा दरगुज़र करने वाला है। अगर ग़ौर किया जाए तो हमस ब इन्सानों के अन्दर खोट ही खोट है। हम कहां से खरा माल लाएंगे। अल्लाह की बारगाह में पेश करने लायक़ हमारे काम हैं हीं नहीं, अलबत्ता मतलूब यही है कि हम कोशिश करें कि हमारा जो माल अल्लाह के यहां जाए वह बिल्कुल खरा हो, उसमें कोई खोट न हो, हम यह कोशिश करते रहें, और कोशिश करने के बाद अगर उसके अन्दर कमी रह जाएगी तो अल्लाह तआला दरगुज़र फ़रमा देगा, इसलिए कि हमारे पास खोटा ही माल है। हम ख़ुद खोटे हैं और हमारा माल भी खोटा है, लेकिन अगर हम खोट दूर करने की कोशिश करेंगे और फिर खोट रह जाए तो अल्लाह के यहां मुआख़्ज़ा नहीं होगा और अगर हमारी ग़फ़लत के साथ खोट बाक़ी रहा, हमें उसकी तरफ़ परवाह ही नहीं हुई, और हमने यही ख़्याल कर लिया कि सब चलेगा और सब चलता है तो याद रहे कि यहां दुनिया में जो चाहो चला लो, आख़िरत में सब नहीं चलता। वहां बहुत खरा माल चलता है। वहां वही माल चलता है जो वहां लायक़े कुबूलियत हो और वही काम अल्लाह के यहां कुबूल भी होता है। इसलिए इसका भी ध्यान रहना चाहिए कि हम जो बड़े से बड़ा काम कर रहे हैं, ख़ुदा न ख़्वास्ता उसके अन्दर खोट है तो वह उसके यहां क़ाबिले कुबूल नहीं है। हमे हमेशा उसका इस्तहज़ार रहना चाहिए। हम जो काम करें सोच–समझ कर करें। हमारी कोशिश यह हो कि हमारा वह काम सही तरीक़े पर अंजाम पाए और सही तरीक़ा वह है जो अल्लाह के रसूल स0अ0 ने बताया। दुनिया कुछ भी कहे, लेकिन सही तरीक़ा वही है जो हुज़ूर स0अ0 ने अमल करके दिखाया, वही तरीक़ा सही है।

ध्यान देने योग्य पहलू: दूसरी बात यह है कि इन्सान का अन्दर भी सही हो, यानि जब हम काम कर रहे हों तो हमारा तरीक़ा भी ठीक हो, हमारी नियत भी ठीक हो और तरीक़ा भी ठीक हो। अगर एक भी चीज़ गड़बड़ होगी तो मामला ख़तरे में है। नियत गड़बड़ होगी तो अमल बिल्कुल ही चौपट, और अगर अमल के अन्दर गड़बड़ हुआ तो जैसा गड़बड़ हुआ तो उसके एतबार से मामला भी गड़बड़ हो जाएगा। लिहाज़ा हमारा अमल भी सही होना चाहिए और नियत भी सही होनी चाहिए। अल्लाह तआला सब जानता है। हम जो काम कर रहे हैं वह उसके इल्म में है कि हम किसके लिए कर रहे हैं, अल्लाह के लिए कर रहे हैं या किसी दूसरे के लिए और फिर हम अल्लाह के रास्ते में जो ख़र्च कर रहे हैं वह क्या हैसियत रखता है? यह भी अल्लाह तआला ख़ूब जानता है, आदमी लाख दावा करे कि हम क़ीमती चीज़ ख़र्च कर रहे हैं, लेकिन हक़ीक़त में क़ीमती है या नहीं, यह अल्लाह तआला ख़ूब जानता है। इसीलिए कह दिया कि तुम जो भी खर्च कर रहे हो अल्लाह तआला उन सारी चीज़ों से ख़ूब वाक़िफ़ है।

ज़कात के कुछ मसले

मुफ्ती राशिद हुसैन नदवी

ज़कात इस्लाम का एक महत्वपूर्ण अंग है। कुरआन पाक में जगह–जगह नमाज़ के साथ ज़कात देने पर भी ज़ोर दिया गया है। आप स0अ0 ने इसे इस्लाम के पांच बुनियादी हिस्सों (मूलभूत कर्तव्य) में से एक बताया है।

सोने–चांदी का निसाब (मात्रा)

चांदी की मात्रा दो सौ दिरहम जबकि सोने की मात्रा बीस मिसक़ाल है। हिन्दुस्तान के उलमा की खोज चांदी के दो सौ दिरहम यानि साढ़े बावन तोला (612.360 ग्राम) और सोने के बीस मिसक़ाल यानि साढ़े सात तोला (87.480 ग्राम) के बराबर होते हैं। जहां तक नक़द और व्यापारिक माल का संबंध है तो उनकी मिल्कियत का अनुमान भी चांदी के की मात्रा से किया जायेगा यानि अगर किसी के पास चांदी की मात्रा के बराबर नक़द रक़म या व्यापारिक माल है तो वो शरीअत के अनुसार साहबे निसाब (जिस पर ज़कात अनिवार्य हो) है।

फिर ये भी ध्यान रहे कि सोना–चांदी चाहे इस्तेमाल हो रहे ज़ेवर की शक्ल में हो या न इस्तेमाल हो रहे ज़ेवर की शक्ल में हो, चाहे सिक्कों या जुरूफ़ वग़ैरह की शक्ल में हो, अगर वह निसाब (मात्रा) के बराबर है और उस पर साल गुज़र जाता है तो उसकी ज़कात बहरहाल वाजिब (अनिवार्य) हो जायेगी। यही आदेश नक़द रक़म का भी है। लेकिन बक़िया दूसरे माल यानि उरूज़ में ये भी शर्त है कि वो व्यापार की नियत से हों वरना उन पर ज़कात वाजिब नहीं होगी।

किसी के पास निसाब के बराबर (मात्रानुसार) ज़कात का माल है तो अगर साल के बीच में उस माल में बढ़ोत्तरी होती है तो उस बढ़े हुए माल का हिसाब पहले से मौजूद माल की तारीख़ से किया जायेगा। जब बक़िया माल पर साल गुज़र जाये तो उसकी ज़कात के साथ उस ज़ायद माल की भी ज़कात निकालना ज़रूरी होगा ये नहीं कि हर बढ़ोत्तरी के लिये अलग से साल का हिसाब किया जाये और यह कि साल गुज़रने में अंग्रेज़ी महीनों के बजाये चाँद के महीनों का हिसाब किया जायेगा।

व्यापारिक माल के बारे में आ चुका है कि उन पर ज़कात अनिवार्य है। जैसे अगर किसी की दुकान या कोई कारोबार है तो साल गुज़रने के बाद उसके पास जो कुछ नक़द रक़म या सामान है उसकी ज़कात उस पर फ़र्ज़ है और सामान का मूल्य निकालते समय उनके उसी दिन के मूल्य का एतबार होगा जिस दिन वो उनकी ज़कात अदा कर रहा है।

शेयर पर ज़कात

ज़कात हर प्रकार के व्यापारिक माल पर अनिवार्य है चाहे वो जानवरों का व्यापार हो या गाड़ियों का व्यापार हो या ज़मीन का और क्योंकि शेयर भी व्यापारिक माल के अन्तर्गत आते हैं अतः उन पर भी ज़कात फ़र्ज़ है। अगर किसी ने शेयर इस उद्देश्य से ख़रीदे हैं कि उन पर वार्षिक लाभ लेगा, उनको बेचेगा नहीं, तो उसको अपनी कम्पनी से ख़बर करनी चाहिये कि उसका कितना सामान अचल है जैसे बिल्डिंग और मशीनरी इत्यादि की शक्ल और कितना माल चल है जैसे नक़द, कच्चा माल तैयार माल इत्यादि। जितनी सम्पत्ति अचल है उन पर ज़कात नहीं होगी और जितनी सम्पत्ति चल है उन पर ज़कात अनिवार्य होगी। अगर कम्पनी के माल का विवरण न मिल सके तो इस हालत में एहतियात के तौर पर पूरी ज़कात अदा कर दी जाये और अगर शेयर इस उद्देश्य से ख़रीदे हैं कि जब बाज़ार में उनकी क़ीमत बढ़ जायेगी तो उनको बेच करके लाभ कमायेगें तो पूरे शेयर की पूरी बाज़ारी क़ीमत पर ज़कात अनिवार्य होगी। जैसे आपने पचास रूपये के हिसाब से शेयर ख़रीदे और मक़सद ये था कि जब उनकी कीमत बढ़ जायेगी तो उनको बेचकर मुनाफ़ा कमाएंगे। उसके बाद जिस दिन आपने ज़कात का हिसाब निकाला उस दिन शेयर की क़ीमत साठ रूपये हो गयी तो अब साठ रूपये के हिसाब से उन शेयर की मालियत निकाली जायेगी और उस पर ढ़ाई प्रतिशत के हिसाब से ज़कात अदा करनी होगी।

प्राविडेन्ड फ़न्ड पर ज़कात

ज़कात फ़र्ज़ होने की एक अहम शक्ल ये भी है कि उस पर इनसान का सम्पूर्ण नियन्त्रण भी हो। इसी कारण से फ़ुक़्हा (धर्मज्ञाताओं) ने कहा है कि अगर किसी को कर्ज़ दिया और बाद में क़र्ज़ लेने वाला उससे इनकार कर रहा है बज़ाहिर उसका मिलना मुश्किल है या किसी जगह डालकर भूल गया या किसी दरिया इत्यादि में गिर गया तो उन रूपयों की ज़कात वाजिब नहीं होगी। फिर जब अप्रत्याशित रूप से यह माल मिल जाये तो गुज़रे हुए

सालों की ज़कात उस पर वाजिब नहीं होगी। ये रक़म जिस वक़्त मिली है उस वक़्त से उसका हिसाब लगाया जायेगा। (हिन्दिया 1/187)

जहां तक प्राविडेन्ड फ़न्ड का संबंध है तो इसमें एक हिस्सा वो होता है जो शासन उसमें मिलाकर देता है। जहां तक इस दूसरी बढ़ी हुई राशि का संबंध है तो चाहे उसे ईनाम कहा जाये या सेवा का मेहनताना जिसका अभी मालिक नहीं हुआ है। अतः उस पर गुज़रे हुए दिनों की ज़कात वाजिब होने का कोई करण नहीं है। चर्चा योग्य फ़न्ड का वो हिस्सा है जो सेवा के दौरान वेतन से कटकर जमा होता है इसका मामला ये है कि कर्मचारी इसका अधिकारी है लेकिन उस पर अधिकार प्राप्त नहीं हुआ है अतः इस रक़म पर भी गुज़रे हुए दिनों की ज़कात वाजिब नहीं होगी। उलमा–ए–मुहक़्क़ीन का रूझान इसी तरफ़ है।

सोने और चांदी को मिलाना

किसी के पास साढ़े सात तोला (612.480 ग्राम) सोना न हो लेकिन उसके पास कुछ सोना और कुछ चांदी मौजूद हो तो क्या उसके ऊपर ज़कात वाजिब हो जायेगी। इस मसले में दो राय हैं:

1– इमाम शाफ़ई और कई दूसरे लोगों के निकट उस पर ज़कात वाजिब नहीं होगी। इमाम शाफ़ई ने अपनी किताब अलउम में इस पर बहस की है कि उसके पास न सोने की पर्याप्त मात्र है न चांदी की तो उस पर ज़कात कैसे वाजिब हो सकती है जबकि दोनो अलग–अलग जिंस (धातु) हैं।

2– दूसरी राय हनफ़ी मसलक और कई दूसरे लोगों की है कि अगर दोनों के मिलाने से पर्याप्त मात्रा हो जाये तो ज़कात अनिवार्य हो जायेगी। इस पर बहस बुकैर इब्ने अब्दुल्लाह रज़ि0 की रिवायत से कि ज़कात निकालने में सहाबा का तरीक़ा चांदी और सोने के मिलाने का था। फिर दोनों क़ीमत के एतबार से एक ही जिंस (धातु) हैं।

बहरहाल अक़्ली दलील दोनों तरफ़ से मज़बूत हैं लेकिन मनकूली दलील में इस एतबार से प्रथम पक्षधर का पक्ष कुछ मज़बूत घोषित किया जाता है कि हज़रत बुकैर की रिवायत हदीस की किताब में नहीं मिलती। फिर इमाम अबू हनीफ़ा और साहिबैन की बीच ये मतभेद है कि सोने और चांदी को मिलाने की कैफ़ियत क्या होगी।

इमाम अबू हनीफ़ा के निकट दोनों को मूल्य के अनुसार मिलाया जायेगा। यानि अगर किसी के पास दो तोला सोना और दो तोला चांदी है तो ये देखा जायेगा कि दो तोला सोना अगर बेच दिया जाये तो क्या साढ़े बावन तोला या उससे ज़्यादा चांदी हासिल हो जायेगी। अगर इतनी ज़्यादा चांदी हासिल हो सकती है तो वो साहिबे निसाब माना जायेगा। फ़तवा इमाम साहब के कथन ही पर है जबकि साहिबैन (अर्थात इमाम अबू हनीफ़ा के दो शिष्य इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) के नज़दीक दोनों को जुज़ (हिस्से) के एतबार से मिलाया जायेगा यानि वज़न के एतबार से अगर आधा निसाब सोने का और आधा चांदी या दो तिहाई साने का और एक तिहाई चांदी का या एक चौथाई सोने का और तीन चौथाई चांदी का पाया जा रहा हो तो ज़कात वाजिब हो जायेगी वरना नहीं।

इमाम साहब के कथन के अनुसार अगर सोने–चांदी की मामूली मात्रा भी किसी के पास हो तो वो साहिबे निसाब बन जायेगा और उसके लिये ज़कात लेना जायज़ नहीं रहेगा। इतनी मामूली मिक़दार बिल्कुल मामूली लोगों के पास भी आम तौर से रहती है। इस परिस्थिति में ये सवाल उठाया जाता है कि क्या मौजूदा हालात में साहिबैन के कथन को अपनाया जा सकता है। इसलिये कि साहिबैन के कथन पर चला जाये तो इसमे ज़कात देने वाले और लेने वाले दोनों का ख़्याल हो जायेगा और संतुलन बना रहेगा।

लेखक के ख़्याल से ऐसा करने की गुंजाइश है। इसलिये कि इस मसले का संबंध हालात के बदलने से है और इस बात पर सहमति है कि हालात बदल जाये तो आदेश बदल जाता है। फिर ये तो इफ़्ता के हुक्म में भी लिखा हुआ है कि मतभेद अगर साहिबैन और इमाम साहिब के बीच में तो मुफ़्ती उनमें से किसी पर भी फ़तवा दे सकता है। लिहाज़ा सामूहिक शोध के इस दौर में उलमा सहमत हो जायें तो इसकी गुंजाहश होगी। फिर इमाम साहब की एक रिवायत साहिबैन के कथन के मुताबिक़ भी है लिहाज़ा इमाम साहब के इस क़ौल को इस्तहबाब पर महमूल करके ततबीक़ की जा सकती है। मुफ़्ती किफ़ायत उल्ला साहब ने किफ़ायतुल मुफ़्ती में इसी तरह ततबीक़ दी है।

बात का अर्थ यह है कि व्यापारिक माल वाले मसले में मुफ़्ता बिही हुक्म से हटने की इजाज़त नहीं दी जा सकती जबकि दूसरे मसले में अगर उलमा इत्तिफ़ाक़ कर लें तो इसकी गुंजाइश है।

रिज़्क़-ए-इलाही की अहमियत व बरकत

अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

"और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो सब सज्दारेज़ हो गये सिवाय इब्लीस के, उसने नहीं माना और तकब्बुर किया और काफ़िरों में हो गया।"बिला शुब्हा यह आयत आदमियत और शर्फ़ इन्सानियत की अब्दी दलील है। अल्लाह ने ख़ुद ही तमाम फ़रिश्तों में आदम की बालादस्ती साबित की। फिर अपनी क़ाबिले तकरीम मख़लूक़ फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि सबके सब आदम सज्दा रेज़ हो जाएं। बग़ैर किसी इस्तसना के तमाम फ़रिश्तों ने सज्दा किया। बल्कि इन्सान की पैदाइश से पहले ही ऐलाने ख़ुदावन्दी हो चुका था कि मैं एक नई मख़लूक़ पैदा करने वाला हूं जब उसे पैदा कर चुकुं तो तुम सब सज्दारेज़ हो जाना। जब आपके रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से एक इन्सान पैदा करने वाला हूं, जब मैं उसे दुरूस्त कर दूं और अपनी तरफ़ से उसमें रूह फूंक दूं तो तुम उसके लिये सज्दे में गिर पड़ना। इन आयात को मिलाया जाए तो यह बात मालूम होती है कि मलाएका को आदम के सज्दे का हुक्म दो दफ़ा दिया गया। एक मर्तबा पैदाइश से पहले, दूसरी दफ़ा पैदाइश के बाद। तख़लीक़े इन्सान का तज़किरा जिस एहतिमाम से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने मुक़द्दस कलाम में जा–बजा फ़रमाया है, वह बजाए ख़ुद शर्फ़ इन्सानियत की बैन दलील है। जब इब्लीस ने सज्दा नहीं किया तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इन अल्फ़ाज़ में उसे फ़टकारा वह इन्सानियत के लिये वह इन्सानियत के लिये बाइसे हज़ार नाज़ व सद इफ़्तिख़ार है। ऐ इब्लीस इस मख़लूक़ को सज्दा करने से क्या चीज़ माने बनी जिसे मैंने अपनी दोनों हाथों से पैदा किया है।

बस मर मिटने वाला उस्लूब है कि ऐसा अंदाज़े बयान किसी और मख़लूक़ की पैदाइश के लिये कहीं नज़र नहीं आता। यह ऐजाज़ सिर्फ़ और सिर्फ़ इन्सान के हिस्से में आया है।

इन्तिहाई आजिज़ी के साथ झुकने को सज्दा कहते हैं। इसकी इन्तिहा यह है कि अपने चेहरों को ज़मीन पर रख दिया जाए। यह इबादत व बन्दगी क इन्तिहाई शक्ल है। बाज़ हज़रात ने यह बताने की कोशिश की है कि फ़रिश्तों का सज्दा दरअस्ल अल्लाह के लिये था और हज़रत आदम को क़िब्ला की हैसियत दी गयी थी। लेकिन अरबियत की ज़ौक़ और अल्फ़ाज़े कुरआनी इसकी साफ़ नफ़ी करते हैं, सज्दा हज़रत आदम ही के लिये था और अल्लाह के हुक्म से ही किया गया था। यह सज्दा इबादत न था बल्कि सज्दाए एहतिराम व तकरीम था जिसके ज़रिये अल्लाह अपनी नौ पैदा शुदा मख़लूक़ की अहमियत व हैसियत वाज़ेह करना चाहता था। साबिक़ा बाज़ उम्मतों में इस तरह के सज्दों की इजाज़त थी। ख़ुद कुरआन ने हज़रत यूसुफ़ के ताल्लुक़ से गवाही दी है कि बादशाह बनने के बाद जब आपके भाई दरबारे शाही में पहुंचे तो सब सज्दे में गिर पड़े। इस आख़िरी उम्मत को अक़ीदे की हर ख़राबी से पाक व साफ़ रखने के लिये अल्लाह तआला ने उसके लिये हर तरह का सज्दा हराम किया है। सज्दाए इबादत तो खुला हुआ शिर्क है। सज्दाए ताज़ीमी भी इसलिए शदीद हराम रखा गया कि कहीं यह आइन्दा सज्दाए इबादत का ज़रिया न बन जाए। हो सकता है कि इसी अश्काल से बचने के लिये बाज़ मुफ़स्सिरीन का ज़हन इस तरफ़ गया हो ि कइस सज्दे को सज्दाए एहतिराम व तकरीम न क़रार दिया जाए और उसे सिर्फ़ हज़रत आदम की तरफ़ रुख़ करके उनको क़िब्ला की हैसियत देकर सज्दा करना क़रार दिया जाए। इसका जवाब यह है कि वहां हुक्म देने वाला बराहरास्त अल्लाह तआला है। अल्लाह जिसके लिये जो चाहे हुक्म दे। उस उम्मत पर ग़ैरुल्लाह के लिये हर क़िस्म के सज्दे को हराम करने वाला भी अल्लाह ही है। उसका जब जो हुक्म है उसकी फ़रमाबरदारी करना अस्ल बन्दगी है। लिहाज़ा जब इससे कोई अश्काल ही नही तो ख़्वाहमख़्वाह एक ख़ुद साख़्ता इश्काल पैदा करके उससे बचने के लिये किसी ज़बरदस्ती की तावील की कोई ज़रूरत नहीं है।

मज़कूरा आयत में है कि फ़रिश्तों को जैसे ही सज्दे का हुक्म मिला वह फ़ौरन सज्दे में चले गये। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को अपने एहकामात की ऐसे ही तकमील पसंद है। हुक्मे इलाही के बाद फिर फ़ौरन तामीले हुक्म क्या, क्यों और कैसे का सवाल ही नहीं। इब्लीस इसी

अगर–मगर के चक्कर में मारा गया और हमेशा के लिये रांजे दरगाह हुआ। आज भी कुछ ऐसे अहमक़ रौशन ख़्याल पाये जाते हैं जो सरीह हुक्मे इलाही के बाद क्यों और कैसे के चक्कर में पड़कर अपनी आक़िबत ख़राब कर रहे हैं। वह दरपरदा इब्लीसी किरदार अदा कर रहे हैं।

इब्लीस यानि सबसे बड़ा शैतान जो अल्लाह की नाफ़रमानी और अपने तकब्बुर की वजह से शर और बदी की सबसे बड़ी अलामत बन गया और हमेशा के लिये अल्लाह की रहमत से महरूम कर दिया गया। तकब्बुर दिमाग़ी मर्ज़ है। और तकब्बुर की वजह से होने वाले गुनाहों से तौबा की तौफ़ीक़ कम मिलती है। उसके मुक़ाबले में नफ़सानी ख़्वाहिश से मग़लूब होकर किया जाने वाला गुनाह अख़लाक़ी मर्ज़ है। इन गुनाहों से तौबा की तौफ़ीक़ निस्बतन ज़्यादा मिलती हैं बाक़ी गुनाहों की हैसियत से इन्सान की ज़िम्मेदारी यह है कि हर तरह की मासियत से बचने की फ़िक्र करे।

इब्लीस के हवाले से बाज़ हज़रात ने यह लिखा है कि यह भी फ़रिश्ता था इसका नाम अज़ाज़ील था। अल्लाह की खुली नाफ़रमानी की वजह से इस पर फिटकार बरसी और यह शैतान बना दिया गया। बाज़ हज़रात ने यह भी लिखा है कि जिस तरह हज़रत आदम तमाम इन्सानों के जद्दे अमजद हैं उसी तरह इब्लीस सबसे पहले जिन्न हैं जिनसे जिन्नात की नस्ल चली।

बाज़ हज़रात ने हज़रत इब्ने अब्बास के हवाले से बताया है कि इब्लीस जन्नत के ज़िम्मेदारों में था और आसमाने दुनिया के फ़रिश्तों का सरदार था। इबादत और इल्म में बहुत फ़ायक़ था। अपने इसी शर्फ़ व इज़्ज़त की वजह से उसके ज़हन में बड़ाई का ख़्याल आया जिसका इज़हार अल्लाह की नाफ़रमानी की शक्ल में हुआ। लिहाज़ा मलाइका की जमाअत से निकाल दिया गया और मस्ख़ करके शैतान बना दिया गया। इब्लीस के फ़रिश्तों की जमाअत में होने से मुताल्लिक़ जितनी बातें की गयीं हैं वह किसी सही हदीस सेसाबित नहीं हैं और हज़रत इब्ने अब्बास की तरफ़ मन्सूब अक़वाल की सनद भी ज़ईफ़ है। एक निहायत ज़ईफ़ बल्कि मौजूअ रिवायत में इब्लीस के फ़रिश्ता होने की बात आयी है। उसके मुक़ाबले में कुरआने करीम और सही रिवायात सेयह बात मालूम होती है कि इब्लीस जिन्नात में था। आग से बनाया गया था। फ़रिश्तों को जिस तरह ख़ा समक़ामक़ुर्ब हासिल होता है, उसे भी एक ख़ा समक़ाम हासिल था। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से हसद में मुब्तिला हो गया। अल्लाह से नाफ़रमानी की और हमेशा के लिये फटकारा गया। बाक़ी मलाएका की सरदारी की बात या इब्लीस के अव्वलीन जिन्न होने की बात है यह मुमकिन तो है लेकिन कोई यक़ीनी बात नहीं। रसूलेअकरम स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया कि फ़रिश्ते नूर से पैदा हुए और इब्लीस को सख़्त तपिश वाली आग से पैदा किया गया और आदम अलै0 को जिस चीज़ से पैदा किया गया उसके बारे में तुम्हें बताया जा चुका है यानि मिट्टी से।

बाज़ हज़रात ने यह अक़्ली इस्तदलाल किया है कि आदम को सज्दे का हुक्म फ़रिश्तों को दिया गया था, जब इब्लीस फ़रिश्तों में नहीं था तो फिर सज्दा न करने पर इताब क्यों हुआ। लिहाज़ा वह फ़रिश्तों ही में था, उसका जवाब बाज़ हज़रात ने यूं दिया है कि मलाएका के साथ रहते–रहते वह भी उन्हीं में का एक फ़र्द समझा जाता था, लिहाज़ा हुक्म में वह भी बराहेरास्त शामिल हो गया। लेकिन उससे बेहतर कुरानी जवाब यह है कि ख़ुद इब्लीस को भी सज्दा करने का हुक्म था चाहे मलाएका के साथ शामिल मानकर हो या बराहे रास्त हो। इरशाद है:

"तुझे सज्दा करने में क्या रुकावट पेश आयी जबकि मैंने तुझे हुक्म दिया।"

लिहाज़ा सज्दा न करने पर इताब को बुनियाद बनाकर उसके फ़रिश्ता होने का इस्तदलाल दुरुस्त नहीं। जिस तरह फ़रिश्ते मामूर थे वह भी मामूर था।

मज़कूरा आयत एहकामे इलाही के बाब में बहु त मोहतात रहने पर ज़ोर देती है। बज़ा अवक़ात बरसों की इबादत व रियाज़त तकब्बुर के एक झटके में ख़त्म हो जाती है। अल्लाह महफ़ूज़ रखे इस तरह बज़ा अवक़ात ईमान का शोला इस तरह लपकता है कि ज़िन्दगी के सारे गुनाह धुल जाते हैं। फ़िरऔन के जादूगर हज़रत मूसा से मुक़ाबला करने के लिये आये थे। ज़िन्दगी पूरी जादू जैसे ग़लीज़ अमल में गुज़री थी। हज़रत मूसा के मोजज़े ने दिल की आंखें रोशन कर दीं। उसकी एक किरन ने ईमान की वह शमा रौशन की कि लाख फिरऔन ने धमकियां दीं लेकिन ईमान का जादू जो सर चढ़ कर बोला जो जामे शहादत से कम किसी मर्तबे पर राज़ी न हुआ।

इस्लाम का तसव्वुर–ए–तिजारत

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

दीन–ए–इस्लाम ने तिजारत का इन्तिहाई जामेए तसव्वुर पेश किया है और नबी करीम स0अ0 ने इस मैदान में ऐसे अमली नमूने अता किए हैं, जिनकी तक़लीद कामयाबी की ज़ामिन है। दीन–ए–इस्लाम में तिजारत का मक़सद महज़ नफ़ा कमाना नहीं है, बल्कि तिजारत इन्सानों के बीच ख़िदमते ख़ल्क़ और बाहमी ताउन की एक बेहतरीन सूरत है, जिसमें नफ़ा कमाना सानवी चीज़ है और इन्सान की हाजत बरारी पहली चीज़ है। दीने इस्लाम तिजारत में इस क़द्र इन्हिमाक का मुतक़ाज़ी भी नहीं कि इन्सान ज़िक्रे ख़ुदा से ग़ाफ़िल हो जाए और इतने तकश्शुफ़ का दायी भी नहीं कि इन्सान दस्ते सवाल दराज़ करने पर मजबूर हो, बल्कि वह एक ऐसी मोतदिल राह का रहबर है, जिस पर चलकर इन्सानी ज़िन्दगी के हक़ीक़ी मक़सद से ग़ाफ़िल नहीं रह सकता।

तलब–ए–माश की फ़िक्र और तिजारती मैदान से राह व रस्म के बारे में अल्लाह तआला का कहना है: "और दुनिया में अपना हिस्सा न भूलो।"

हदीसों में भी तिजारत की अहमियत व इफ़ादियत अलग–अलग पैरायों में ज़िक्र की गयी है, इरशाद–ए–नबवी स0अ0 है: पाकीज़ा कमाई वह है जो इन्सान अपनी मेहनत से कमाए और हर क़िस्म की तिजारत है जो धोखा व फ़रेब से पाक हो। (मुसनद अहमद:17728)

दीन–ए–इस्लाम ने तिजारत के इन सभी तरीक़ों पर सख़्त नक़्द किया है, जो हुक़ूक़ुल इबाद की अदायगी में हारिज हों। कुरआन मजीद में उन लोगों का ज़िक्रे ख़ैर है जो दुनियावी मशाग़िल में यादे इलाही से ग़ाफ़िल नहीं होते, अल्लाह तआला का इरशाद है:

"वह लोग जिनको तिजारत और ख़रीद–फ़रोख़्त अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल नहीं करती।" (सूरह नूर: 37)

इस आयत में ताजिर तबक़े के लिए अल्लाह के हक़ को अदा करने का पैग़ाम है और हुक़ूक़ुल इबाद की हक़तलफ़ी से बचने का हुक्म यूं है: "और आपस में एक दूसरे के माल को नाहक़ मत खाओ।" (सूरह बक़रह: 188)

हदीसे नबवी में तिजारत की जामईयत के लिए एक आम उसूल यह बयान किया गया है कि न ख़ुद को नुक़सान रहे और न दूसरे को नुक़सान पहुंचाया जाए। (इब्ने माजा: 2430)

इस्लाम ने नुक़सान की तमाम शक्लों पर पाबन्दी लगायी है और सबसे बढ़कर सूद को सख़्ती से हराम क़रार दिया है इसलिए कि सूद मनफ़अत का हिसार बांध देता है और यह दौलत चंद साहूकारों की मिल्कियत बन जाती है। इस्लाम में ऐसी ज़ख़ीराअंदोज़ी भी मना है जो बाज़ार में मस्नूई क़िल्लत पैदा करे और फिर ज़ख़ीरा अंदोज़ मनमानी क़ीमत वसूल करे। इसी तरह कारोबारे तिजारत में जुए की तमाम शक्लें (लाटरी, सट्टा इत्यादि) भी नाजाएज़ है जिनके ज़रिए इन्सान बिना किसी मेहनत के धोखा देकर दौलत जमा करता है। नाप–तौल में ज़रा सी कमी भी इस्लाम की रौ से बिल्कुल ग़लत है। माले तिजारत में मिलावट और धोखा देना भी इस्लाम की नज़र में बहुत क़बीह और इन्सानियत सोज़ अमल है। और ज़्यादा मुनाफ़े के पाने में बेज़रूरत क़समें खाना भी ग़ैर शरई काम है और उन सभी चीज़ों की तिजारत मना है जो शरई नुक़्ता–ए–नज़र से हराम और किसी भी हैसियत से इन्सानी मुआशरे के लिए नुक़सान देह हों।

हदीस–ए–नबवी स0अ0 में मौक़ा ब मौक़ा उन सभी चीज़ों का अहाता किया गया है जिनसे तिजारत का मुबारक पेशा मज़मूम बन जाता है और उस पर यह फ़रमान–ए–नबवी स0अ0 सादिक आता है: बिलाशुब्हा क़यामत के दिन ताजिर फ़ासिक़ व फ़ाजिर उठाए जाएंगे। (बैहिक़ी: 4848)

इस्लाम ने तिजारत का ऐसा तसव्वुर पेश किया है, जिसमें नुक़सान के तमाम मनाफ़िज़ बन्द हैं और इज्तिमाई व इन्फ़िरादी हर पहलू से नफ़ा ग़ालिब है। उसके बरख़िलाफ़ दुनिया में तिजारत के जितने भी तसव्वुर पेश किए गए , उन सबमें बहुत सी ऐसी कमियां मौजूद हैं, जो कभी–कभी इज्तिमाई तौर पर नुक़सान देह होता है और कभी इन्फ़िरादी तौर पर मुफ़सिद होते हैं और उनके अख़्तियार की सूरत में दौलत सिर्फ़ चन्द हाथों सिमट कर आ जाती है और मुआशिरे के बक़िया अफ़राद उन्हीं के रहीने मिन्नत बन जाते हैं।

तिजारत के फ़रोग़ में इस्लाम का नज़रिया यह है कि असहाब–ए–मुआमला आपस में रज़ामन्द हों और जिस चीज़ की ख़रीद–फ़रोख़्त तय हुई हो वह चीज़ अपनी सभी नवीयतों के साथ तय हो 20

इस्लामी सभ्यता तथा उसकी विशेषताएं

मुहम्मद नफ़ीस ख़ान नदवी

सभ्यता किसे कहते हैं?

मनुष्य की सामूहिक जीवन व्यवस्था को "संस्कृति" नामक शब्द से जाना जाता है। इसके लिए अंग्रेज़ी में "कल्चर" नामक शब्द का प्रयोग किया जाता है। संस्कृति की संरचना उस समय के फ़लसफ़ों, इल्मी नज़रियों तथा इन्सानी दिमाग़ की निर्माणी योग्यताओं से होती है। इसी ताने–बाने से होकर इन्सान जिन चक्रों से गुज़रता है और जो इल्मी तर्जुबे उसके सामने आते हैं उसको "सभ्यता" की संज्ञा दी जाती है। दूसरे शब्दों में आदिकाल से निकलकर सामूहिक जीवन के व्यवस्थित होने के मार्ग पर चलना ही सभ्यता कहलाता है।

साधारणतयः सभ्यता चार मूल–भूत विचारों से मिलकर बनती है।

1– आर्थिक साधन

2– राजनीतिक व्यवस्था

3– नैतिक परंपराएं

4– ज्ञान व कला की सदृढ़ व्यवस्था

पश्चिमी चिन्तक व लेखक "विल डॉरेन्ट" के शब्दों में:

"*Civilization* is a social order promoting cultural creation. Four element consulting it: economic provision, political organization, moral tradition and the pursuits of the knowledge and the arts."

अर्थात सभ्यता एक सामाजिक व्यवस्था है जो संस्कृति को उन्नति प्रदान करती है, इसके चार मूलभूत तत्व हैं: आर्थिक साधन, राजनीतिक व्यवस्था, नैतिक परंपराएं, ज्ञान व कला की सदृढ़ व्यवस्था।

सभ्यता की कहानी उस समय से शुरू होती है जबसे इन्सान को ज़मीन में क़रार व सुकून हासिल हुआ है। ग़ौर व फ़िक्र की ख़ुदादाद सलाहियतों को बरोएकार लाकर इन्सानों ने उसमें बहुत से इज़ाफ़े किए हैं। शायद ही कोई क़ौम ऐसी गुज़री हो जिसने सभ्यता के इतिहास में कोई उन्नति न की हो। अलबत्ता वह तत्व जिसमें एक तहज़ीब दूसरी तहज़ीब पर हावी हो जाती है और वह सभ्यता फैलती जाती है वह उस सभ्यता की विशेषताओं की ताक़त है। इसीलिए जो सभ्यता अपनी बुनियादों के आधार पर जितनी व्यापक, स्वाभाविक रूप से जितनी इन्सान दोस्त, मेल–मिलाप के एतबार से जितनी ज़्यादा व्यवहारिक और अपने उसूलों में जितनी ज़्यादा वास्तविक होगी, वह सभ्यता के इतिहास में उतनी ही विश्वस्नीय होगी।

इस्लामी सभ्यता

मानवीय सभ्यताओं में "इस्लामी सभ्यता" सबसे नुमायां और अपने मिशन व पैग़ाम के लिहाज़ से सबसे ज़्यादा आफ़ाक़ी व आलमगीर है। इसका प्रभाव लगभग दुनिया के हर हिस्से तक पहुंचा है और दुनिया की कोई क़ौम उसके एहसानों को ख़त्म नहीं कर सकती है। अलबत्ता इन्सानी तहज़ीब में इस्लामी प्रभाव की निश्चितता व पुनर्निमाण एक कठिन कार्य अवश्य है, क्योंकि यह असर तहज़ीबे इन्सानी के वजूद का हिस्सा बनकर उसके ख़ून में इस तरह मिल गए हैं कि अब उन्हें अलग करना बहुत कठिन है फिर भी अगर इस्लामी सभ्यता का दूसरी सभ्यताओं से तथा इस्लामी समय का दूसरे समयों से तुल्नात्मक अध्ययन किया जाए तो कम से कम दस आधार ऐसे हैं जो ख़ालिस इस्लामी सभ्यता की देन हैं तथा जिनके असरात दुनिया की मौजूद सभी

तहज़ीबों में शामिल हैं। उन दस बुनियादी इम्तियाज़ात व इस्लामी असरात को हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 ने निम्नलिखित विषयों के तहत बयान किया है।

1– स्पष्ट एकेश्वरवाद

2– मानवीय एकता व समानता का विचार

3– मानवता की पराकाष्ठा तथा मानव का सम्मान व श्रेष्ठता की घोषणा

4– स्त्री के निम्न श्रेणी के होने से बहाली तथा उसके अधिकारों की सुरक्षा

5– नकारात्मकता तथा दुष्कर्म की काट तथा मानवीय मानसिकता की हौसलामन्दी व विश्वास की बहाली

6– दीन व दुनिया का समावेश तथा दुश्मन व मानवीय वर्गों की एकता

7– दीन व इल्म के बीच पाक रिश्ते का क़याम व इस्तहकाम और एक की क़िस्मत को दूसरे की क़िस्मत से जोड़ देना, ज्ञान का सम्मान और उसे उद्देश्यपूर्ण, लाभकारी तथा अल्लाह को पाने का ज़रिया बनाने की कोशिश।

8– अक़्ल से दीनी मामलों में भी काम लेने और फ़ायदा उठाने और उन्फुस व आफ़ाक़ में ग़ौर करने की तरग़ीब।

9– उम्मत–ए–इस्लामिया को दुनिया की निगरानी व रहनुमाई, इन्फ़िरादी व इज्तिमाई अख़लाक़ व रुझानात के एहतिसाब, दुनिया में इन्साफ़ के क़याम और शहादते हक़ की ज़िम्मेदारी कुबूल करने पर आमादा करना।

10– आलमगीर एतक़ादी व तहज़ीबी वहदत का क़याम। (तहज़ीब व तमद्दुन पर इस्लाम के एहसानात व असरातः 20–21)

इस्लामी तहज़ीब के गहरे व उमूमी असरात व एहसानात का एतराफ़ ख़ुद मग़्रिबी चिन्तकों ने भी खुले शब्दों में किया हैं। प्रसिद्ध अंग्रेज़ी लेखक राबर्ट ब्रेफ़ाल्ट लिखता हैः

"It was not science which brought Europe back to life. Other and manifold influences from the civilization of Islam communicated its first glow to European life." (The Making of Humanity)

(केवल विज्ञान ही (जिनमें अरबों का एहसान प्रामाणित है) यूरोप में ज़िन्दगी पैदा करने की ज़िम्मेदार नहीं है बल्कि इस्लामी सभ्यता ने यूरोप की ज़िन्दगी पर बहुत बड़े–बड़े और विभिन्न प्रकार के प्रभाव डाले हैं और उसकी शुरूआत उसी समय से हो जाती है जबसे इस्लामी सभ्यता की किरणें यूरोप पर पड़नी शुरू हुईं)

इस्लामी सभ्यता की विशेषताः

निंसदेह इस्लामी सभ्यता ने मानवीय प्रगति के इतिहास में महान योगदान दिया है। उसने आस्था, ज्ञान, साहित्य व शिल्प, शासन व हुक्मरानी के क्षेत्र में दुनिया की क़ौमों पर बहुत एहसान किए है। और उसका बुनियादी कारण वह नुमायां विशेषताएं हैं जो उस सभ्यता को दुनिया की सभी सभ्यताओं से अलग व श्रेष्ठ करती है। वे विशेषताएं निम्नलिखित हैंः

एकेश्वरवादः

इस्लामी सभ्यता का पूरा वजूद तौहीद के अक़ीदे अर्थात एकेश्वरवाद की बुनियाद पर स्थापित है। मानवीय इतिहास की यह पहली व विश्वव्यापी सभ्यता है जो एक अल्लाह की ओर बुलाती है। इस आस्था ने वहदत अर्थात ख़ुदा के एह होने का वह रंग पैदा किया है जिसकी छाप इस्लामी सभ्यता के समस्त भाग पर पड़ती है।

सार्वभौमिकता

इस्लामी सभ्यता की दूसरी विशेषता यह है कि वह अपने आकर्षण के आधार से पूरी मानवता पर हावी है तथा अपने संदेश व मिशन के एतबार से सार्वभौमिक है यह ख़ानदान व तनव्वो के बावजूद मानवीय एकता की घोषणा करती है। अतः इस्लामी सभ्यता उन सभी क़ौमों व क़बीलों के सपूतों पर फ़ख़्र करती है जिन्होंने समान रूप से इस सभ्यता के निमार्ण तथा इसकी उन्नति में हिस्सा लिया। अबू हनीफ़ा, मालिक, शाफ़ई, अहमद,

ख़लील, सुयोबिया, फ़राअ, कुन्दी, फ़ाराबी, इब्ने रुश्द और उनकी तरह के दूसरे मशाहीर–ए–उम्मत मुख़्तलिफ़ क़ौमों और इलाक़ों से ताल्लुक़ रखने के बावजूद मुसलमान ही थे।

नैतिकता

तीसरी विशेषता यह है कि उसने नैतिक मापदण्डो को पूरी व्यवस्था में प्रथम स्थान दिया है। अतः प्रशासन ज्ञान व शिल्प, क़ानून निर्माण, जंग व सुलह, आर्थिक तथा आंतरिक मामलों में नैतिक मापदण्डो को हमेशा ध्यान में रखा गया है बल्कि इस्लामी सभ्यता इस मामले में जिस हद्दे कमाल को पहुंची है, उस तक कोई भी नई या पुरानी सभ्यता नहीं पहुंच सकी।

ज्ञान

यह अकेली सभ्यता है जो ख़ुद इल्म व फ़न की राहें खोलती है। ज़मीन व आसमान में खोज का भावना को जन्म देती है। इसीलिए बग़दाद, दमिश्क, क़ाहिरा, कुर्तुबा और ग़रनाता के मीनारों से इल्म की जो रोशनी निकली उसने पूरी दुनिया को रोशन किया और यही वह तहज़ीब है जो दीन और सियासत को अलग नही करती बल्कि दीन के साथ–साथ सियासत के भी उसूल और आदाब बयान करती है।

मज़हबी रवादारी

इस्लामी तहज़ीब की हैरतअंगेज़ ख़ासियत उसकी मज़हबी रवादारी है। यह ख़ासियत दुनिया की किसी ऐसी तहज़ीब में नहीं पायी गयी जिसमें मज़हबी बुनियादें भी शामिल हों अलबत्ता ऐसी तहज़ीब जिसमें ख़ुदा का तसव्वुर न हो मुमकिन है कि वह तहज़ीब तमाम मज़हबों को एक ही नज़र से देखे और उनके मानने वालों के साथ एक सा मामला करे लेकिन जिस तहज़ीब की बुनियादों में मज़हबी अनासिर शामिल हों और उसका हक़ पर होने का दावा भी हो, वह मज़हबी रवादारी का दावा करे, इतिहास में ऐसी कोई मिसाल नही मिलती, यह ख़ासियत इस्लामी तहज़ीब के साथ ख़ास है कि ख़ालिस मज़हबी बनियादों पर क़ायम होने के बावजूद उसने सबसे ज़्यादा रवादारी, इन्साफ़ और इन्सानियत का रवैया अख़्तियार किया है।

शेषः इस्लाम का तसव्वुर–ए–तिजारत

.....और उसके सिलसिले में कोई गोशा मजहूल न छोड़ा जाए, ताकि लड़ाई–झगड़े की नौबत न आए। इस्लाम में तिजारत के दो तरीक़े बहुत ही पसंदीदा हैंः

1–मुशारकत 2–मुज़ारबत

मुशारकत में दो या उससे ज़्यादा लोग मिलकर सरमाया फ़राहम करते हैं और आपसी रज़ामन्दी के साथ कारोबार शुरू करते हैं और उससे हासिल होने वाले नफ़े–नुक़सान में बराबर के शरीक ठहरते हैं। साहबे हिदाया लिखते हैंः मुशारकत जायज़ है, इसलिए कि जब नबी करीम स0अ0 मबऊस हुए तो यह तरीक़ा राएज था और आप स0अ0 ने लोगों को इस तरीक़े पर बरक़रार रखा। (हिदायाः 2/3)

मुज़ारबत का तरीक़ा भी इक़्तिसादी फ़रोग़ में निहायत अहम है। इस शक्ल में सरमाया एक शख़्स का होता है और मेहनत दूसरे की, और मुनाफ़ा फ़ीसद के एतबार से तय किया जाता है, लेकिन मामले के इन्अिक़ाद से क़ब्ल तमाम शराअत व लवाज़िम का तय करना बहुत ज़रूरी है और अगर तिजारत में नुक़सान होता है तो ऐसी सूरत में साहिबे माल को माली नुक़सान बर्दाश्त करना होगा और मेहनत करने वाले की मेहनत राएगा जाएगी। शाह वली उल्लाह देहलवी रह0 ने मुज़ाबरत की यह तारीफ़ की हैः मुज़ाबरत का मफ़हूम यह है कि माल एक इन्सान का होगा और काम दूसरे शख़्स का होगा ताकि नफ़ा दोनों के बीच उसके मुताबिक़ तक़सीम हो जो उन्होंने मामले के वक़्त तय किया हो। (हुज्जतल्लाहुल बालिग़ाः 1/688)

फ़ुक्हा–ए–इस्लाम ने मुशारकत और मुज़ारबत की मुख़्तलिफ़ अक़साम बयान की हैं, जिनकी तफ़सील फ़िक़ की किताबों में दर्ज है।

हासिल बहस यह कि इस्लाम एक ऐसा तिजारती तसव्वुर पेश करता है जिसमें हर एक की भलाई है और हर एक नफ़ा व नुक़सान दोनों में शरीक है और उसमें तिजारत की तमाम शक्लें हमदर्दी व उख़्वत और अमन व सुकून की हामिल हैं। यही वजह है कि दुनिया के एक बड़े ख़ित्ते में इस्लाम की इशाअत मुसलमान ताजिरों के तुफ़ैल में हुई, जिन्होंने अपने किरदार से दुनिया के सामने अपनी और अपने मज़हब की नाफ़ईयत का पुख़्ता सुबूत पेश किया था।

जबान की नेकियां

अच्छी बात का हुक्म देना बुरी बात से रोकना

ज़बान की ख़ूबियों और में एक बड़ी ख़ूबी और क़ाबिले रश्क़ ख़ूबी यह है कि नेक और अच्छी बात का हुक्म दे यानि अम्र बिल मारूफ़ करे और बुरी बात से रोके यानि नहि अनिल मुनकर करे। यह मुबारक काम अम्बिया-ए-किराम (अलैहिस्सलाम) और असहाब-ए-किराम (रज़ि०) का है। और जो काम अम्बिया-ए-किराम (अलैहिस्सलाम) और असहाब-ए-किराम (रज़ि०) की ज़िन्दगी का मशग़ला हो, उस काम की बरकत का क्या कहना। सारे अम्बिया-ए-किराम (अलैहिस्सलाम) ने अपनी-अपनी क़ौम को नेक ज़िन्दगी गुज़ारने का हुक्म दिया और उस राह में बड़ी तकलीफ़ें उठायीं, गालियां सुनीं, पत्थर खाए, ज़ख़्मी हुए और उनका बायकाट किया गया। हुज़ूर-ए-अक़दस (स०अ०) ने सफ़ा पहाड़ पर चढ़कर फ़रमाया, लोगो! लाइलाहा इल्लल्लाह कहो, कामयाब हो गये, फिर आप (स०अ०) तशरीफ़ ले गये और बड़े-बड़े सरदारों को इस्लाम व ईमान की दावत दी। उन सरदारों ने आप (स०अ०) को इतना सताया और नवजवानों से फिकवाए कि आप (स०अ०) के पैर मुबारक ज़ख़्मी हो गए और इतने लहूलुहान हो गये कि और अल्लाह पाक से ऐसी पुरदर्द और असरअंगेज़ दुआ मांगी कि हज़रत जिब्राईल ले आए और उस नालायक़ और मूज़ी क़ौम को सज़ा देने की इजाज़त मांगी। मगर आप (स०अ०) चूंकि रहमतुल लिल आलमीन थे, इसलिए न तो आप स०अ० ने बद्दुआ की, न सज़ा देने को क़ुबूल फ़रमाया। निहायत मुलायम और शफ़क़त व रहमत से पुर अल्फ़ाज़ कहे, लेकिन दावत इलल्लाह और अम्र बिल मारूफ़ यानि अच्छी बात कहना न छोड़ा। वह ज़बान बड़ी मुबारक है जो अच्छी बात का कहना न छोड़े और अच्छे काम करने का हुक्म करती रहे। क़ुरआन शरीफ़ में है:

"उससे अच्छी बात कहने वाला कौन होगा जो अल्लाह की तरफ़ बुलाए और नेक काम करे और कहे कि मैं मुसलमानों में से हूं।" (सूरह हामीम सज्दा)

"तुम एक बेहतरीन उम्मत हो जो पैदा की गयी है लोगों के लिए, हुक्म देते हो अच्छी बात का और रोकते हो बुरी बात से और अल्लाह पर ईमान रखते हो।" (सूरह आले इमरान)

"और अपने घरवालों को नमाज़ का हुक्म दीजिए।" (सूरह ताहा)

दावत के आदाब

अच्छी बात का हुक्म देने और बुराई से रोकने का काम कई तरीक़ों से किया जा सकता है। निजी मुलाक़ातों में, इज्तिमाई तौर पर तक़रीर के ज़रिए, बातों-बातों में, छोटों से, बराबर वालों से, बड़ों से इन सब तरीक़ों के अलग-अलग उसूल व आदाब हैं। छोटों से मुहब्बत व शफ़क़त से कहना असरदार भी है और फ़ायदेमन्द भी। बराबर वालों से इख़्लास और उल्फ़त अच्छी बात कहना आदाब-ए-कलाम में से है। बड़ों से बहुत ही अदब व एहतिराम से पेश आना और ऐसे तरीक़े से बात करना जिससे बड़ों की बड़ाई और अज़मत में फ़र्क़ न आए, ज़बान की हज़ार ख़ूबियों में से एक ख़ूबी है। निजी मुलाक़ातों में बात करने में अख़्लाक़ व मुनकसिर मिज़ाजी तासीर का दर्जा रखती है। तक़रीर करने में इसका ख़्याल रखना बहुत ज़रूरी है कि बात जची-तुली और लफ़्फ़ाज़ी से ख़ाली हो। न इतनी लम्बी हो कि सुनने वाले उकता जाएं न इतनी छोटी हो कि मतलब भी न समझ में आए। तेज़ और शोलाबयानी तक़रीर की तासीर को कम कर देती है। नर्मी से की गयी बातचीत में बहुत असर होता है। अल्लाह तआला ने जब हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) और हज़रत हारून (अलैहिस्सलाम) को फ़िरऔन जैसे काफ़िर और ख़ुदा के दुश्मन के पास दावत इलल्लाह के लिए भेजा तो फ़रमाया:

"तुम दोनों उससे नर्म बात करना।" (सूरह ताहा)

हदीस शरीफ़ में रसूलुल्लाह (स०अ०) का इरशाद आया है कि बशारत से काम लो, नफ़रत पैदा करने वाली बात न कहो, नर्मी और आसानी पैदा करो, तंगी और सख़्त बात से परहेज़ करो।

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह०

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP -19

Issue: 01 | JANUARY 2019 | VOLUME: 11

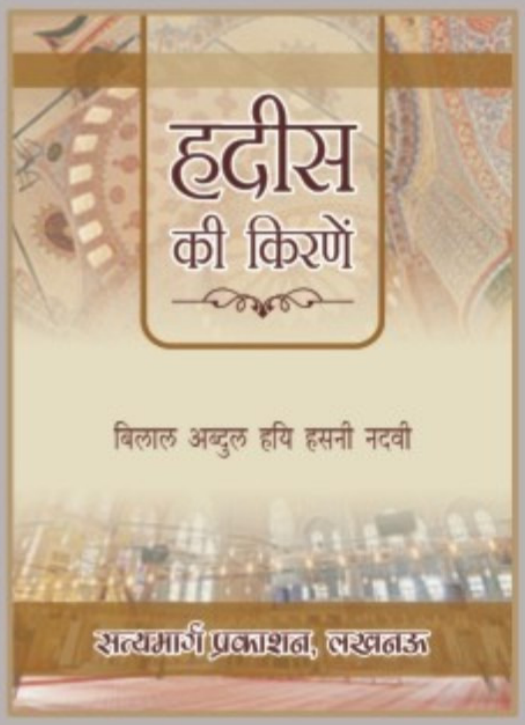

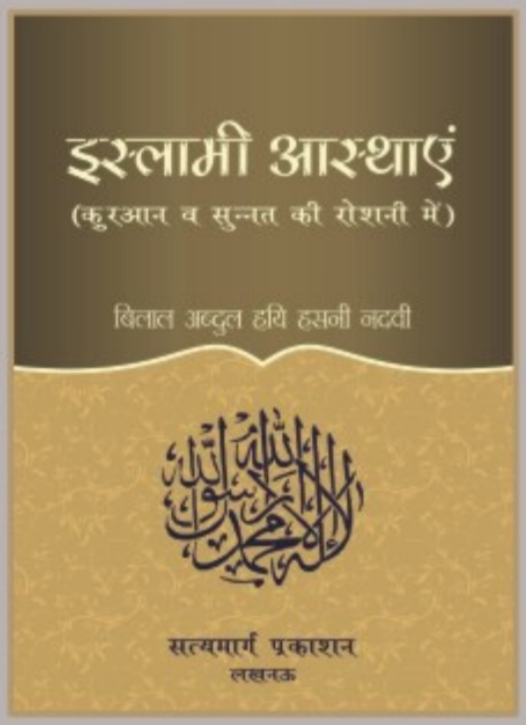

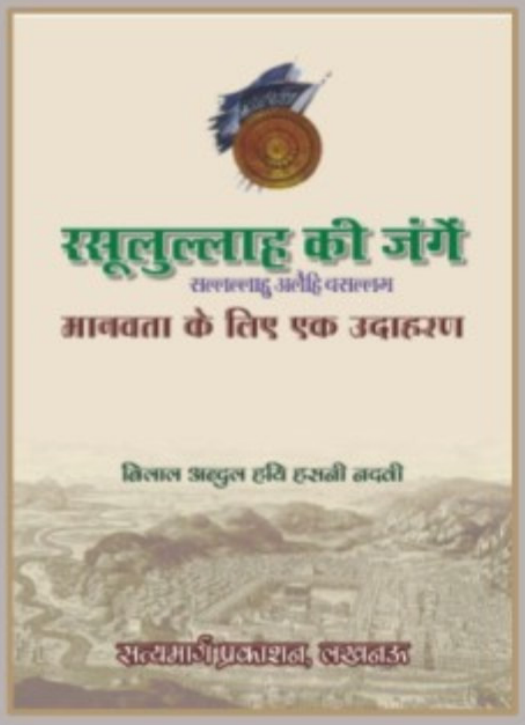

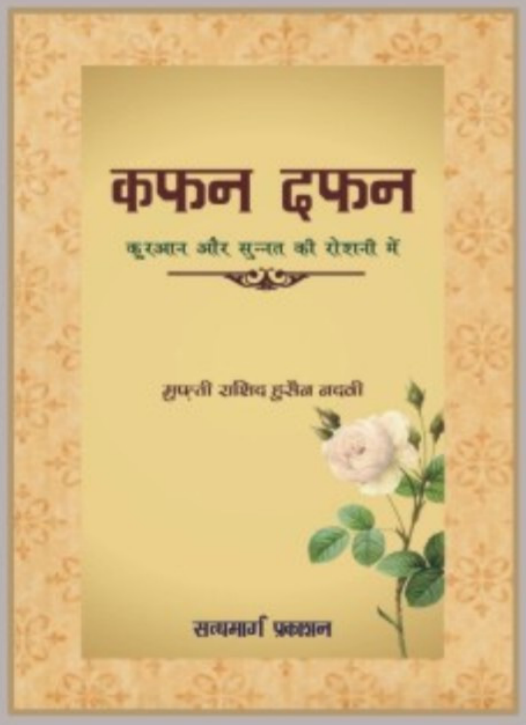

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.